मेरीखेती

दिसंबर, 2024 । मूल्य : रु49

www.merikheti.com | YouTube

विषय सूची

सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

खेत खलियान	01 - 07
बागवानी फसलें	08 - 12
मशीनरी	13 - 19
कृषि सलाह	20 - 21
पशुपालन–पशुचारा	22 - 25
औषधीय खेती	26 - 28
सम्पादकीय	29

विज्ञापन के लिए संपर्क करें : 91-9899991906, 91-8800777501

सम्पादकीय

किसानों के संघर्ष की इंतहां हो गई

कड़ाके की जिस ठंड में किसी का रजाई छोड़ने का मन नहीं होता उस ठिठुरन को परास्त कर आम जन के लिए अन्न, फल, सब्जी और दूध जैसी अद्वितीय चीजें पैदा करने वाला किसान हलकान है। कभी उसे खाद की लाइन में संघर्ष करना पड़ता है तो कभी प्रकृति की मार झेलनी पड़ती है। एक पल में बच्चे की तरह पाली फसल ओले आदि से बर्बाद होते देख कर भी वह अडिग खड़ा रहता है। धरती उसकी माता जो है। मां कभी अपने बच्चों को भूखा नहीं सोने देती। इसी भरोसे के भरोसे वह फिर नये सिरे से फसल उत्पादन में जीवन खपाने को उद्यत रहता है। 23 दिसंबर को देश के हर जिला–प्रदेश मुख्यालय पर चंद किसानों को सम्मान देकर सरकारी नुमाइंदे व राजनैतिक आका उनकी जय–जयकार कर उनके गुणगान गाते नजर आते हैं लेकिन वह दूसरे दिन ही किसानों की दुश्वारियां भूल जाते हैं।

किसान दिवस 23 दिसंबर को पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरणसिंह जी की जयंती के अवसर पर मनाया जाता है। उनका जन्म इसी दिन सन 1902 को हुआ था। उन्होंने किसानों के कल्याणार्थ अनेक कार्य किए। वह किसानों की समस्याओं के निदान पर ठोस नीति निर्धारण की पहल करने वाले एकमात्र व्यक्ति थे। अन्नदाता के परिश्रम का मूल्य तो शायद ही कभी कोई सरकार दे पाए किंतु अचरज तो यह है कि हम इतने स्वार्थपरायण हैं कि अनाज की आर्थिक कीमत तक किसानों को नहीं दे पाते हैं। किसानों द्वारा अत्यधिक कम कीमत में बिकने के कारण कई सब्जियों को सड़कों पर फेंक देने जैसी घटनाएँ आम हैं क्योंकि इस कीमत से उनका परिवहन तक का खर्च भी नहीं निकल पाता। सरकारें एम एस पी यानी न्यूनतम समर्थन मूल्य तो घोषित करती हैं लेकिन 6 फीसदी से ज्यादा किसानों की फसल एम एस पी पर नहीं बिक पाती।

किसान आमजन, कीट पतंगों, पक्षी, पशु और मानव सब का पोषण करता है इसके बाद भी किसान और किसान परिवार कुपोषण का शिकार रह जाता है। अनेक जागरूक लोग सीधे किसानों से बाजिव कीमत पर माल खरीदना चाहते हैं लेकिन इसके लिए कोई ठोस व्यवस्था नहीं है। किसान आम आदमी तक छोटी खेपों में अपना उत्पाद आम उपभोक्ता तक पहुंचा नहीं पाता। एक लोकोक्ति ष्धन्ना भगत कौ हरि सते हेत, बगैर बीज उपज आयौ खैतष पर किसान ज्यादा भरोसा करता है। वह भगवान भरोसे किसानी और अपना जीवन दोनों खपा जाता है। उसे मीडिया, सरकार पर जितना भरोसा नहीं जितना खुद के परिश्रम और सबके मालिक पर है। उनके हक के लिए संघर्ष भी बेमानी होते रहे हैं, फिर किसान भरोसा करें तो किस पर करें।

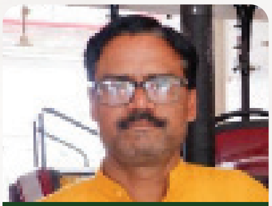

श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीखेती

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय, मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट, गलगोटिया विश्वविद्यालय

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त) उत्तर प्रदेश

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर, राजस्थान

डॉ. अनिल कुमार सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन
(एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

डॉ सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

गेहूं की फसल में खरपतवारों से छुटकारा: आसान ट्रिक्स जो आपकी उपज बढ़ाएं

गेहूं की फसल में कई प्रकार के खरपतवार उगते हैं, इनको नियंत्रण करना किसानों के लिए एक बड़ी चुनौती बन जाती हैं। खरपतवार फसल के साथ पोषक तत्व, पानी और सूर्य की रोशनी के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। गेहूं की फसल में खरप. तवार नियंत्रण बहुत आवश्यक हैं। गेहूं की फसल में खरपतवार नियंत्रण के उपाय निचे निम्नलि. खित दिए गए हैं।

गेहूं में रासायनिक खरपतवार नियंत्रण

बेहतर होने के कारण रासायनिक खरपतवार नियंत्रण को प्राथमिकता दी जाती है। कम लागत और समय की भागीदारी के साथ दक्षता साथ ही, इससे कोई यांत्रिक क्षति नहीं होती है। जिससे की हाथ से निराई–गुड़ाई के दौरान होने वाली फसल क्षति से बचा जा सकता है। इसके अतिरिक्त, रासायनिक खरपतवार नियंत्रण अधिक प्रभावी है क्योंकि निराई–गुड़ाई से पंक्तियों के भीतर के खरपतवार खतम नहीं होते है।रासाय. निक खरपतवार नियंत्रण से पंक्तियों के भीतर के भी खरपतवारों को मार दिया जाता हैं। खरप. तवार वनस्पतियों के प्रकार के आधार पर शाकनाशियों का चयन फसल को संक्रमित करना और आगे शाकनाशी का प्रयोग करना चाहिए। उचित अनुप्रयोग का उपयोग करके इष्टतम खुराक और समय पर तकनीकी के हिसाब से इनका छिड़काव करके अच्छा नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता हैं।

बुवाई के तुरंत बाद गेंहू में खरपतवार नियंत्रण

भारतीय गेंहू एवं जौ अनुसंधान संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र सिंह छौक्कर ने बताया कि किसान गेहूं बिजाई के 3 दिन बाद पाईरो. क्सा सल्फोन 60 ग्राम का प्रति एकड़ 150 से 200 लीटर पानी मिलाकर से छिड़काव करें। इससे मंसी, जंगली जेई व लोमड़ घास पर नियंत्रण हो जाएगा। अगर बुवाई के तुरंत बाद खेत में खरपतवार उग आते है तो उपज पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए फसल में समय पर खरपतवारों नियंत्रण करना बहुत आवश्यक होता है।

गेहूं की फसल में चौड़ी पत्तियों वाले खरपतवारों का नियंत्रण

गेहूं की फसल में कई प्रकार के खरपतवार उगते है जिनमे चौड़ी पत्तियों वाले खरपतवारों से बहुत नुकसान देखने को मिलता है, इनको नियंत्रण करने के लिए 2,4 –डी नामक दवा की 200 ग्राम/एकड़ या मेटसल्फ्यूरॉन 1.6 ग्राम/एकड़ अथवा कारफेंट्राजोन 8 ग्रामध्एकड़ की मात्रा का उपयोग करके 150 लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव किया जा सकता है।

कच्ची पत्तियों या घासों का नियंत्रण

गेंहू की फसल का सबसे खतरनाक खरपतवार फालारिस माइनर यानी मंडूसी है। इसको नियंत्रित करने के लिए क्लोडिनॉफॉप 24 ग्राम/एकड़ या फेनोक्साप्रोप 40 ग्राम/एकड़ अथवा पायरीफॉक्सिफेन की 10 ग्राम/एकड़ मात्रा का उपयोग करना चाहिए।

मिश्रित खरपतवारों का नियंत्रण

इस श्रेणी में सभी प्रकार के खरपतवार आते हैं, जिनको नियंत्रण करने के लिए 2,4–डी या मेटसल्फ्यूरॉन को क्लोडिनॉफॉप या आईसोप्रोटोरोन के साथ मिलाकर छिड़काव फसल (बोने के 30–35 दिनों बाद, जब मिट्टी में पर्याप्त नमी हो) करना चाहिए।

कम बारिश में भी उगाएं कैर: जानें सूखा–सहनशील कैर की खेती के राज

कैर (कैपेरिस डेसीडुआ (फोर्स्क) एक बहुउद्देशीय, बारहमासी, लकड़ीदार झाड़ी या छोटा पेड़ हैं, ये गर्म और शुष्क क्षेत्र में प्राकृतिक रूप से उगता हुआ पाया जाता है। राजस्थान में इसे आमतौर पर कैर या केर कहा जाता है। जबकि हरियाणा में इसे टींट या डेला के नाम से जाना जाता है। जबकि अंग्रेजी में इसे केपर बेरी के नाम से जाना जाता है। यह प्रजाति शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र का एक महत्वपूर्ण घटक है और पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके कच्चे फल कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन और खनिजों से भरपूर होते हैं।

कैर की खेती के लिए जलवायु

कैर अत्यधिक सूखा सहने वाला पौधा है जो गर्मी की कठोर जलवायु परिस्थितियों के लिए अनुकूलित है। इसकी गहरी जड़ प्रणाली, कम पत्ते और सख्त शंक्वाकार कांटे इसे सूखा सहने के अनुकूलित बनाते हैं। यह 150 मि.मी. से भी कम वर्षा क्षेत्रों के लिए अच्छी तरह से अनुकू. लित है। गर्मी के महीने में जब थार रेगिस्तान में तापमान 50°c तक बढ़ जाता है तब भी ये पौधा जीवित रहता हैं।

कैर की खेती के लिए मिट्टी

कैर की झाड़ी हर प्रकार की मिट्टी में आसानी से उग सकती हैं। कम उर्वरकता वाली या कम उपजाऊ मिट्टी में भी इसको आसानी से उगा कर अच्छी उपज प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा कई प्रकार की 6.5–8.5 पीएच वाली क्षारीय रेतीली और पथरीली मिट्टी में अच्छे से उगाया जा सकता है।

कैर की खेती में पौधे की तैयारी और बुवाई

प्राकृतिक पुनर्जनन 4–5 मीटर तक फेंके गए बीजों और जड़ के माध्यम से होता है। इसका बीज मई–जून के महीने में पक्षियों द्वारा खाया जाता है और इस प्रक्रिया में बीज बिखर जाते हैं। इस प्रकार बिखरे हुए बीज अंकुरित होते हैं। फलों के पकने की अवधि के तुरंत बाद वर्षा ऋतु आती है जिसके परिणामस्वरूप ये बीज अंकुरित होते हैं। अंकुरों को सावधानीपूर्वक नियंत्रित करके उगाया जा सकता है। गर्मियों के दौरान 2 X 2X 2 फीट आकार के गड्ढे 4–5 मीटर की दूरी पर खोदकर फिर से भरने चाहिए। लगभग 15 दिनों तक गड्ढों को धूप में रखने के बाद ऊपरी मिट्टी में लगभग 10 किलोग्राम गोबर की खाद मिला दें। जुलाई–अगस्त से पहले पौधों की सिंचाई और देखभाल की आवश्यकता होती है। तीसरे वर्ष से झाड़ियाँ वर्षा आधारित परिस्थितियों में भी जीवित रह सकती है।

कैर की खेती में फल आने का समय

बीज के माध्यम से उगाए गए पौधे 6 से 7 वर्ष की उम्र में वानस्पतिक अवस्था में फल देने लगते हैं। प्रचारित पौधे चार साल बाद फल देना शुरू कर सकते हैं। फूल 6–12 महीने पर आते हैं। मानसून के मौसम के अंत में यानी, शरद ऋतु (अक्टूबर) की शुरुआत के दौरान और जून के अंत तक यानी अगले मानसून सीजन की शुरुआत तक जारी रहता है। फूलों का चरम मौसम फरवरी–मार्च (वसंत का मौसम) है और फलने का मौसम मार्च–अप्रैल में (वसंत के अंत से गर्मियों की शुरुआत तक) होता हैं।

कैर की खेती में फलो की तुड़ाई

अपरिपक्व हरे फल मार्च–अप्रैल के दौरान कटाई के लिए उपलब्ध होते हैं, जबकि फल मई–जून के दौरान पकने की प्रक्रिया होती है जिसकी कटाई बीज निकालने के लिए की जाती है, फलों की तुड़ाई हाथ से की जाती है। फलों को अचार बनाने, सब्जी बनाने या सुख. ाने के लिए हरे नरम मटर के दाने के आकार में तोड़ना चाहिए। अवस्था का अंदाजा फलों के आकार और फलों को दबाकर भी लगाया जा सकता है। सीजन के अंत में यानी अप्रैल के मध्य के बाद काटे जाने पर छोटे आकार के फल भी सख्त हो जाते हैं।

DBW 187 (करण वंदना): गेहूं की अधिक उपज और गुणवत्ता वाली उन्नत किस्म

भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा विकसित गेहूं की किस्म क्ठॅ 187 को देश के उत्तर–पश्चिमी उगाही क्षेत्र के चयनित क्षेत्रों में अत्यधिक और समय से बोवाई वाली परिस्थितियों के लिए विशेष रूप से अनुकूल है।इस लेख में इस किस्म की विशेषताएं, उत्पादन और बुवाई के क्षेत्र से जुडी सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

DBW 187 किस्म की विशेषताएं

- यह DBW 187 किस्म पूरी उगाही क्षेत्र में स्थायित्व के साथ देखी गई है और अधिक पोषक तत्वों और उन्नत प्रबंधन के उपयोग से बेहतर परिणाम प्राप्त हुए हैं।
- यह किस्म धीमे पकने के बावजूद ग्रीष्मकालीन परिस्थितियों में भी अन्य किस्मों की तुलना में अधिक उत्पादन क्षमता है।
- यह किस्म धान और गेहूं के मुख्य रोगों के प्रति प्रतिरोधी क्षमता प्रदर्शित करती है। इसमें "ब्लास्ट" रोग के खिलाफ भी प्रतिरोधकता पाई गई है।
- DBW 187 में उच्च दाना गुणवत्ता (7.6) और अच्छा बड़ा दाना आकार (7.4) पाया गया है।
- इसमें 6–7 मिलीमीटर के बीच फसल के लिए अनुकूल आकार देखा गया है, जिससे यह किस्म विभिन्न उत्पादों के लिए उपयोगी बनती है।
- इसके अनाज में उच्च प्रोटीन मात्रा (12.0%) होती है, जो इसे पोषक तत्वों से भरपूर बनाती है।

DBW 187 उत्पादन

- DBW 187 (करण वंदना) किस्म के बुवाई का समय 25 अक्टूबर से 5 नवंबर तक हैं।
- DBW 187 किस्म का दाना संरचना और गुणवत्ता (स्कोर 10) के अनुसार परिपूर्ण होता है, जिससे उत्पादकता और गुणवत्ता को बनाए रखना संभव हो पाया है।
- चयनित और समय से बोवाई वाली परिस्थितियों में इस किस्म की औसत उपज 61.3 क्विंटल/हेक्टेयर पाई गई है।
- इससे उपज के अलावा 60 – 65 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तुड़ा भी बनता हैं।

DBW 187 किस्म की बुवाई का क्षेत्र

यह किस्म मुख्यतः निम्नलिखित राज्यों और क्षेत्रों में उपयुक्त पाई गई है:

- पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर मंडल को छोड़कर)।
- पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी मंडल को छोड़कर)।
- जम्मू–कश्मीर (जम्मू और कठुआ जिले)।
- हिमाचल प्रदेश (ऊना जिला और पांवटा घाटी)।
- उत्तराखंड (तराई क्षेत्र)।

यह किस्म इन क्षेत्रों में खेती के लिए उपयुक्त साबित हुई है और किसान समुदाय के बीच लोकप्रिय हो रही है।

DBW 371 (करण वृंदा) गेहूं किस्म: अधिक उपज और रोग प्रतिरोधक क्षमता वाली किस्म

गेहूं दुनिया की लगभग 2.5 अरब आबादी के लिए उगाए जाने वाले महत्वपूर्ण खाद्य पदार्थों में से एक है। गेहूं की फसल की खेती मुख्य रूप से तीन व्यापक सांस्कृतिक स्थितियों के तहत की जाती है, अर्थात् समय पर बुआई सिंचित, देर से बोया गया सिंचित और समय पर बोया गया प्रतिबंधित सिंचाई आदि।मैदानी क्षेत्रों के लिए क्ठ 371 किस्म को विकसित किया गया हैं, इसकी विशेषताएँ इस लेख में आपको देखने को मिलेंगे।

DBW 371 (करण वृंदा) गेहूं किस्म की विशेषताएँ

- DBW 371 (करण वृंदा) किस्म गेहूं की अधिक उपज देनी वाली किस्मों में से एक हैं। इस किस्म को भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान करनाल द्वारा विकसित किया गया हैं।
- इस किस्म को अगेती बुवाई और सिंचित क्षेत्रों के लिए विकसित किया गया हैं। ये किस्म संस्थान द्वारा 2023 में विकसित की गयी थी।
- DBW 371 (करण वृंदा) किस्म की औसत उपज 75.9 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक हैं, अच्छी देखभाल की स्थिति में ये किस्म 87.1 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक भी उपज देने की क्षमता रखती हैं।
- DBW 371 किस्म की बाली निकलने की अवधि बुवाई के 102 दिन पर आती हैं, ये किस्म बुवाई करने के बाद 147–153 दिनों में पक कर तैयार हो जाती हैं। इस किस्म के पौधों की ऊंचाई 97–103 (cm) तक होती हैं।
- DBW 371 (करण वृंदा) गेहूं किस्म पत्ती जंग रोग (leaf Rust Disease) से प्रतिरोधी हैं। इसमें प्रोटीन सामग्री (12.2%), उच्लौ. हसामग्री (44.9)य फिनोल सामग्री(2.8) मौजूद हैं।
- इससे उपज के अलावा 75 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तुड़ा भी बनता हैं।

DBW 371 (करण वृंदा) गेहूं किस्म के बुवाई का क्षेत्र

DBW 371 (करण वृंदा) किस्म को उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र (एनडब्ल्यूपीजेड) पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर संभाग को छोड़कर) और पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी संभाग को छोड़कर), जम्मू–कश्मीर के कुछ हिस्से (जम्मू और कठुआ जिला) और हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्से (ऊना जिला और पांवटा घाटी) और उत्तरां. चल (तराई क्षेत्र) के लिए विकसित किया गया हैं।

DBW 371 (करण वृंदा) गेहूं बोने का समय

इस किस्म के बोने का समय नवंबर का पहला और दूसरा सप्ताह हैं।

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
किसानों की खुशहाली की पहचान
इफको
नैनो डीएपी
तरल
50 किलो डीएपी का दम अब सिर्फ
आधा लीटर की बोतल में
IFFCO
NANO
DAP
LIQUID (8:16:0)

राजमा की खेती कैसे करें: सम्पूर्ण मार्गदर्शन, जलवायु, मिट्टी, और उर्वरक प्रबंधन

राजमा की खेती एक प्रमुख दलहनी फसल के रूप में की जाती हैं। भारत में राजमा की खेती बड़े पैमाने पर की जाती हैं। दलहनी फसलें जैसे की चना और मटर की तुलना में राजमा की उपज क्षमता अपेक्षाकृत अधिक है। भारत में राजमा की खेती महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, जम्मू–कश्मीर और पूर्वोत्तर राज्यों में अधिक की जाती हैं। उत्तरी भारत के मदनी भोगों में रबी के मौसम के दौरान इसकी बुवाई का रकबा बढ़ रहा हैं। परंपरागत रूप से राजमा की खेती ख्रीफ के दौरान पहाड़ियों पर की जाती हैं। हालाँकि बेहतर प्रबंधन के कारण मैदानी क्षेत्रों में रबी में अधिक उपज प्राप्त की जा सकती है। इस लेख में आप राजमा की खेती के बारे में विस्तार से जानका. री प्राप्त करेंगे।

राजमा की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

भारत के पहाड़ी क्षेत्रों में राजमा की खेती ख्रीफ के मौसम में की जाती हैं। निचले पहाड़ी क्षेत्रों में इसे वसंत फसल के रूप में भी बोया जाता है। उत्तर–पूर्व के मैदानी इलाकों में इसकी खेती रबी के दौरान की जाती है। पाले और जलजमाव के प्रति राजमा की फसल अत्यधिक संवेदनशील होती हैं। राजमा की फसल की उचित वृद्धि के लिए आदर्श तापमान सीमा 10 डिग्री –27 डिग्री C है। अगर तापमान 30 डिग्री C से ऊपर चला जाता हैं तो, फूलों का गिरना एक गंभीर समस्या बन जाती हैं।

राजमा की खेती के लिए मिट्टी और खेत की तैयारी

राजमा की खेती के लिए हल्की दोमट रेत से लेकर भारी चिकनी मिट्टी उपयुक्त मानी जाती हैं। इस बात का विशेष ध्यान रखें की मिट्टी अत्यधिक घुलनशील लवणों से मुक्त और प्रतिक्रिया में तटस्थ होनी चाहिए। राजमा के बीज मोटे और सख्त आवरण के होते हैं इसलिए अच्छे बीज बिस्तर की आवश्यकता होती है जिसे पूरी तरह से प्राथमिक जुताई द्वारा पूरा किया जाता है। खेत को कल्टीवेटर, हैरो और हल की सहायता से अच्छी तरह से समतल कर लेना चाहिए। एक अच्छे बीज बिस्तर में भुरभुरी लेकिन सघन मिट्टी होती है। पहाड़ियों की अम्लीय मिट्टी में बुआई से पहले चूने को मिलाना चाहिए जिससे की अच्छी उपज प्राप्त की जा सकें।

बीज की मात्रा

राजमा के बीज मोटे होते हैं इसलिए 100 – 125 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती हैं। बुवाई के समय बीज से बीज की दुरी 40 cm x 10 cm रखनी चाहिए। खरीफ के दौरान राजमा की बुवाई जून के आखरी सप्ताह से जुलाई के प्रथम सप्ताह तक समाप्त कर देनी चाहिए। रबी की फसल के रूप में उगाई गयी राजमा की बुवाई अक्टूबर के आखिर में या नवंबर की 15 तारीख तक की जा सकती हैं।

राजमा की फसल में खाद और उर्वरक प्रबंधन

राजमा एक दलहनी फसल हैं परन्तु जैविक नाइट्रोजन स्थिरीकरण में समर्थ नहीं हैं। इसलिए इसको नाइट्रोजन की अधिक मात्रा की आवश्यकता होती हैं। राजमा के लिए 90–120 कि.ग्रा. नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर इष्टतम पाया गया है, नाइट्रोजन का आधा भाग बेसल के रूप में प्रयोग करना चाहिएरू पहली सिंचाई के बाद बुआई और शेष आधा भाग शीर्ष ड्रेसिंग के रूप में दें।

राजमाश फॉस्फोरस के प्रति अच्छी प्रतिक्रिया देता है, इसकी फॉस्फोरस आवश्यकता अन्य दलहनी फसलों की तुलना में स्पष्ट रूप से अधिक है, इसलिए फॉस्फोरस 60–80 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से डालें।

राजमा की फसल में जल प्रबंधन

राजमा की फसल को अधिक सिंचाई की आवश्यकता होती हैं। इसलिए उच्चतम उत्पादकता प्राप्त करने के लिए बुआई के 25 दिन बाद सिंचाई करना सबसे महत्वपूर्ण है और दूसरी सिंचाई बुआई के 75 दिन बाद करें।

राजमा में खरपतवार प्रबंधन

राजमा की फसल में बुआई के 30–35 दिन बाद एक हाथ से निराई/गुड़ाई करें या बीज के उगने से पहले पेंडिमिथालीन 0.75 से 1 कि.ग्रा. ए.आई./हेक्टेयर की दर से बुआई के तुरंत बाद 500–600 लीटर पानी में छिड़काव करें। ये कार्य खरपतवारों से होने वाले नुकसान को ईटीएल (आर्थिक सीमा स्तर) से नीचे रखने में मदद करता है।

राजमा की फसल की कटाई एवं मड़ाई

राजमा की फसल बुवाई से 125–130 दिनों में पक जाती है। पूर्ण परिपक्वता प्राप्त करने के बाद पौधों को दरांती से काटा जाता है। पत्तियों का गंभीर रूप से गिरना, फलियों का रंग बदलना और दानों का कड़ा होना पकने का संकेत होते हैं। कटाई के बाद कुछ दिनों तक धूप में सुखाने के बाद इसे खेत में बंडलों में एकत्र किया जाता है। थ्रेशिंग या मानव श्रम से इसको अलग किया जाता हैं। एक अच्छी तरह से प्रबंधित फसल मैदानी इलाकों की सिंचित परिस्थितियों में आसानी से 20–25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज दे सकती है और 5–10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर वर्षा आधारित फसल के रूप में उपज दे सकती है। फसल से बीज अलग होने के बाद मवेशियों के लिए 40–50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर भूसा भी हो जाता हैं।

कलौंजी की खेती: उपयुक्त जलवायु, मिट्टी, और उन्नत प्रबंधन तकनीकें

कलौंजी (निगेला सैटिवा एल.) रामुनकुलेसिया परिवार से संबंधित एक वार्षिक जड़ी–बूटी वाला पौधा है। इस महत्वपूर्ण बीज मसाला फसल की उत्पत्ति भूमध्यसागरीय क्षेत्र से पश्चिम एशिया से होते हुए उत्तर भारत तक होती है। कलौंजी की खेती पूरे दक्षिण यूरोप, सीरिया, मिस्र, सऊदी अरब, ईरान, पाकिस्तान में व्यापक रूप से की जाती है। भारत में इसकी व्यावसायिक खेती पंजाब, झारखण्ड, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, तमिलना. डु और बिहार में की जाती हैं। भारत में कलौंजी की खेती ज्यादातर पारंपरिक तरीके से की जाती है। इस लेख में हम आपको कलौंजी की खेती के बारे में विस्तार से जानकारी देंगे।

कलौंजी की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु और मिट्टी

कलौंजी ठंडे मौसम की फसल है और इसकी खेती सर्दियों के मौसम में उत्तरी मैदानी इलाकों में की जाती है। बुआई के दौरान 20–25°C तापमान की आवश्यकता होती हैं। ठंड का मौसम फसल की शुरुआती विकास अवधि के लिए अनुकूल है और फसल को पकने के दौरान गर्म धूप वाले मौसम की आवश्यकता होती है।

कलौंजी के लिए उपयुक्त मिट्टी

कलौंजी विभिन्न प्रकार की मिट्टी में अच्छे से उग सकता है। इसकी खेती के लिए कार्बनिक पदार्थ से समृद्ध और पानी खड़े होने से मुक्त मिट्टी अच्छी मानी जाती हैं। हालाँकि, बेहतर उर्वरता स्तर वाली दोमट, मध्यम से भारी मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है। कलौंजी के उत्पादन के लिए मिट्टी का पीएच 5.0–8.5 तक होना चाहिए।

कलौंजी बुवाई के लिए भूमि की तैयारी

अच्छा अंकुरण, वृद्धि और उपज प्राप्त करने के लिए खेत को अच्छी तरह से तैयार करना चाहिए। मिट्टी को अच्छे से तैयार करने के लिए लगभग 2–3 जुताई की आवश्यकता होती है, पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिए और उसके बाद हल्की जुताई करनी चाहिए। हैरो या कल्टीवेटर या देसी हल से जुताई करनी चाहिए। बीज की बुवाई के लिए खेत की सतह अच्छी तरह से समतल और चिकनी होनी चाहिए। बीज के बेहतर और एक समान अंकुरण के लिए बुआई से पहले सिंचाई करनी चाहिए।

कलौंजी की उन्नत किस्में

भारत में कलौंजी की खेती के लिए अलग–अलग क्षेत्रों के लिए अलग–अलग किस्में विकसित की गई हैं जो की निम्नलिखित हैं:

- अजमेर निगेल्ला 1
- अजमेर निगेल्ला 20
- राजेंद्रश्यामा
- पंत कृष्ण
- NS-44
- NS-32
- कालाजीरा

बीज की दर और बुवाई का समय

फसल बीज के माध्यम से उगाई जाती है और एक हेक्टेयर में अलग–अलग बुआई के लिए 5–7 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। बीज बोने का सर्वोत्तम समय मध्य सितंबर से मध्य अक्टूबर है। हालाँकि, समय पर बुआई करने पर अच्छी उपज प्राप्त होती है। मृदा जनित रोगों की रोकथ. ाम के लिए बीजों को ट्राइकोडर्मा कल्चर से उपचारित करना चाहिए बुआई से पहले 10.0 ग्रामधकि.ग्रा. बीज की दर से इसको उपचारित करें।

कलौंजी की बुवाई का तरीका

फसल को दो तरीकों से बोया जा सकता है यानी पंक्ति में बुआई और हाथ से छिड़क कर के। हालाँकि, लाइन बुआई बेहतर होती है क्योंकि यह खरपतवार नियंत्रण संचालन और पौध संरक्षण उपायों की सुविधा प्रदान करता है। बीज को 30 से.मी. की पंक्ति दूरी और 15 से.मी. की पौधे से पौधे की दूरी पर 1.5–2.0 से.मी. गहराई पर बोया जाता है। अगर खेत में आरंभिक नमी कम है, तो हल्की सिंचाई की जा सकती है और बीज बोने के 10 दिन के भीतर अंकुरित हो जाते हैं।

खाद एवं उर्वरकों प्रबंधन

खाद और उर्वरकों का प्रयोग मिट्टी की उर्वरता स्थिति की परीक्षण रिपोर्ट के आधार पर किया जाना चाहिए। आमतौर पर खेत की तैयारी से पहले 5–10 टन अच्छी तरह से विघटित गोबर की खाद या खाद डालें। अच्छा सड़ा हुआ खाद की सलाह दी जाती है क्योंकि आंशिक रूप से सड़ा हुआ खाद पौधे में क्लोरोफिल संश्लेषण को बाधित करता है। मिट्टी में पर्याप्त/अतिरिक्त नमी की स्थिति और मिट्टी जनित बीमारियों को भी आमंत्रित करती है। कलौंजी में 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 20 कि.ग्रा. फोस्फोरस और 20 कि.ग्रा. पोटाश डालना चाहिए। फास्फोरस की कुल मात्रा, पोटाश और नाइट्रोजन की 1/3 खुराक को बेसल खुराक के रूप में और शेष नाइट्रोजन की दो खुराक के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए। बराबर विभाजन, पहले बुआई के 30 दिन बाद, जबकि शेष फूल आने पर खड़ी फसल में शीर्ष ड्रेसिंग के रूप में करना चाहिए। अगर प्रारंभिक फसल की वृद्धि खराब है, बुआई के 3 सप्ताह बाद यूरिया के 1.0% घोल का छिड़काव किया जा सकता है।

कलौंजी में खरपतवार नियंत्रण

कलौंजी के बीज 10 दिनों के भीतर अंकुरित हो जाते हैं, इसलिए बेहतरी के लिए शुरुआत में फसल को खरपतवार मुक्त रखना चाहिए। पौधों की वृद्धि. हाथ से बुआई के 30–60 दिन तक खेत को साफ एवं खरपतवार मुक्त रखना चाहिए। कलौंजी को केवल 2–3 निराई और गुड़ाई की आवश्यकता होती है। पहला 30 दिन पर और दूसरा 60 दिन बाद। खरपतवारों का रासायनिक नियंत्रण प्री–प्लांट से किया जा सकता है, वानस्पतिक चरण के दौरान खरपतवार नियंत्रण, फ्लुक्लवेलिन ⁄ 0.75 से 1.0 किग्रा/हेक्टेयर या ऑक्साडिआर्गिल का 0.075 कि.ग्रा./हेक्टेयर की दर से प्रयोग या ऑक्सीफ्लूरोफेन (ए) 0.15 कि.ग्रा./हेक्टेयर या पेन्डीमेथालिन ⁄ 0.75 से 1.0 का/हेक्टेयर का आकस्मिक अनुप्रयोग। 400–500 लीटर पानी प्रति हेक्टेयर में घोल कर स्प्रे करनी चाहिए।

कलौंजी की कटाई

फसल बुआई के 135–150 दिन बाद पक जाती है। जब बीज पूर्ण हो जाए तो इसकी कटाई कर लेनी चाहिए। कैप्सूल में परिपक्वता आ गई है और पूरा भूरा/काला रंग में बदल गया है तो कटाई कर लेनी चाहिए। एक हेक्टेयर से औसतन 5–10 क्विंटल बीज की उपज प्राप्त की जा सकती है। बीजों को थ्रेशर या छड़ी से पीटकर अलग किया जाता है। उसके बाद बीज को सुखाया जाता हैं और भण्डारित किया जाता हैं।

Crops
Coromandel Fantac Plus
Flusilazole 12.5% + Carbendazim 25% SE
Vegetables Crops
Horticultural Crops
More
Amino Acids
Vitamins
FANTAC
Plus
COROMANDEL INTERNATIONAL LIMITED

भारत में कीवी की खेती: सही तकनीक और देखभाल के टिप्स

कीवी फल आज के दिन बहुत लोकप्रिय और महंगे फलों में से एक हैं। ये फल जीवंत हरी त्वचा और अनूठे स्वाद के लिए पसंद किया जाता हैं। इसलिए ये दुनिया भर के किसानों के लिए एक मूल्यवान फसल हैं। कीवी फल न्यूजीलैंड, इटली, अमेरिका, चीन, जापान, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, चिली और स्पेन में व्यापक रूप से उगाया जाता है। भारत में भी अब इसकी खेती होने लगी हैं, आज के इस लेख में हम आपको भारत में कीवी की खेती के बारे में जानकारी देंगे।

कीवी फल के लाभ

कीवी को Chinese gooseberry के नाम से जाना जाता हैं और इसका वैज्ञानिक नाम। ctinidia deliciosa हैं। कीवी फल का उच्च पोषक और औषधीय महत्व भी है। यह विटामिन बी, विटामिन सी, फॉस्फोरस, पोटेशियम और कैल्शियम जैसे खनिजों का एक समृद्ध स्रोत है। कीवी फलों को ताजा, सलाद और डेजर्ट या अन्य फलों के साथ मिलाकर खाया जाता है। इसका उपयोग स्क्वैश और वाइन बनाने में भी किया जाता है।

भारत में कीवी की खेती

भारत में कीवी ज्यादातर हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, जम्मू–कश्मीर, सिक्किम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश और केरल की मध्य पहाड़ियों में उगाया जाता है। भारत में इसकी खेती कुछ समय पहले ही होनी शुरू हुई हैं, इस कारण क्षेत्रफल और उत्पादन के अनुमान अभी तक उपलब्ध नहीं हुए हैं।

कीवी की खेती के लिए कृषि–जलवायु आवश्यकताएँ

कीवी की खेती के लिए अत्यंत ठंडी जलवायु की आवश्यकता होती हैं। इसकी खेती ऐसे स्थानों पर की जा सकती हैं जहाँ तापमान सर्दी के दौरान 7 डिग्री सेल्सियस से नीचे रहता हो। कीवी के पौधे को समुद्र तल से 800–1500 मीटर की ऊंचाई पर उगाया जा सकता है। इसकी खेती के लिए औसत वर्षा 150 से.मी. प्रति वर्ष की आवश्यकता होती हैं। विकास अवधि के दौरान वर्षा का वितरण अच्छी तरह से होना चाहिए। गर्मियों में, उच्च तापमान और कम आर्द्रता के कारण पत्तियां झुलस सकती हैं। इसलिए निचले इलाकों में इसकी खेती में धूप और गर्मी का तनाव मुख्य समस्या है।

कीवी की खेती के लिए मिट्टी

कीवी की खेती करने के लिए गहरी, समृद्ध, अच्छी जल निकासी वाली बलुई दोमट मिट्टी उपयुक्त होती हैं। मिट्टी का पीएच 6.9 से थोड़ा कम होने पर अधिक फसल की उपज मिलती है। पीएच 7.3 से अधिक होने पर मैंगनीज की कमी के कारण उपज कम होती हैं।

भारत में कीवी की उन्नत किस्में

किसी भी फसल के उत्पादन में किस्मों का सबसे अधिक योगदान होता हैं। कीवी की खेती से अच्छी उपज प्राप्त करे के लिए भारत में भी कई उन्नत किस्में उपलब्ध हैं जो की निम्नलिखित हैं:

- एबट
- एलिसन
- ब्रूनो

- हेवर्ड
- मोंटी
- टोमुरी

कीवी के पौध रोपण के लिए भूमि की तैयारी

- कीवी की बेले होती हैं इसलिए उनको लगने के लिए पहाड़ की ढलानों पर खड़ी भूमि को सीढ़ीदार छतों के रूप में तैयार किया जाता है।
- पौधों को अधिकतम धूप मिले इसका लाभ उठाने के लिए पंक्तियों को उत्तर–दक्षिण दिशा में उन्मुख किया जाना चाहिए।
- इसके बाग की सफल स्थापना के लिए मिट्टी की पूरी तरह से तैयारी आवश्यक है।
- गड्ढों की तैयारी, गोबर की खाद का मिश्रण और गड्ढों को भरने का काम दिसंबर तक पूरा करना है।

पौध रोपण का समय और प्रक्रिया

कीवी के पौधों को वानस्पतिक रूप से कटिंग और ग्राफ्टिंग के माध्यम से तैयार किया जाता हैं। पौधों की रोपाई जनवरी के महीने तक पूरी कर लेनी चाहिए। नर्सरी से पौधों को उखड कर उसी गहराई पर रोपण करना चाहिए जिस गहराई पर नर्सरी में पौधे उग रहे थे। पौधों को ढड्ढो में डाल कर अच्छे से जड़ों के चारों ओर मिट्टी लगानी चाहिए। रोपण करते समय पौधे से पौधे की दुरी का विशेष ध्यान देना बहुत आवश्यक होता हैं। आमतौर पर कीवी की खेती में रोपण के लिए टी–बार और पेरगोला प्रणाली अपनाई जाती है। टी–बार प्रणाली में पंक्ति से पंक्ति की दुरी 4 मीटर और 5–6 मी. पौधे से पौधे की दुरी रखनी होती हैं। पेरगोला प्रणाली में पंक्ति और पौधे की बीच की दुरी 6 मीटर तक होती है।

कीवी की खेती में खाद और उर्वरक प्रबंधन

कीवी के पौधों में 20 कि.ग्रा. गोबर की खाद और 0.5 कि.ग्रा. 15% नाइट्रोजन युक्त एनपीके मिश्रण को हर साल लगाने की सिफारिश की जाती है। पौधों की 5 वर्ष की आयु के बाद 850–900 ग्राम नाइट्रोजन, 500–600 ग्राम फॉस्फोरस और 800–900 ग्राम पोटाश का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

कीवी की खेती में सिंचाई प्रबंधन

सिंचाई सितंबर–अक्टूबर के दौरान प्रदान की जाती है, जब फल वृद्धि और विकास के प्रारंभिक चरण में होता है। कीवी की खेती में 10–15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करना लाभकारी पाया गया है।

कीवी फल की तुड़ाई

कीवी की बेल पर 4–5 साल बाद फल आने शरू हो जाते हैं। 7–8 साल की उम्र वाले पौधे और बेले अधिक उत्पादन देती हैं। तापमान में भिन्नता के कारण फल कम ऊंचाई पर पहले पकते हैं और अधिक ऊंचाई पर बाद में पकते हैं। बड़े आकार के फलों को पहले तोडा जाता हैं।

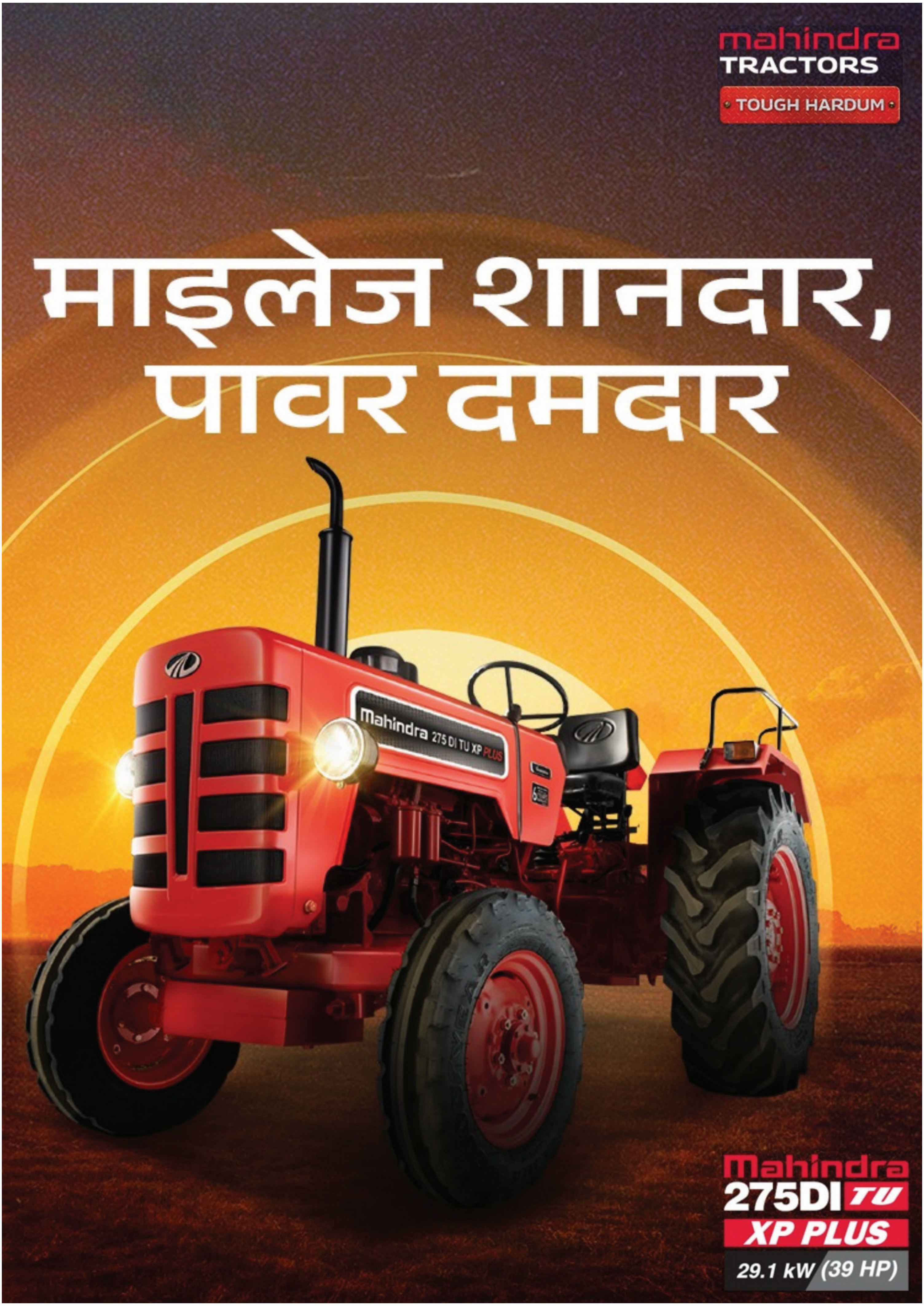

mahindra
TRACTORS
TOUGH HARDUM
माइलेज शानदार,
पावर दमदार
Mahindra 275 DI TU XP PLUS
Mahindra
275DI TU
XP PLUS
29.1 kW (39 HP)

शरीफा (सीताफल) की खेती में करें महारत हासिल: जानें कैसे पाएं 3X मुनाफा

सीताफल को शुष्क क्षेत्र का व्यंजन कहा जाता है क्योंकि यह बहुत मीठा और नाजुक होता है। यह जंगली रूप में भी भारत में पाया जा सकता है। जबकि सीताफल भारत का मूल निवासी पेड़ नहीं है, अंग्रेजी में इसको कस्टर्ड एप्पल के नाम से जाना जाता है, यह देश के कई हिस्सों में उगता है, खासकर महाराष्ट्र और गुजरात में, जो देश में सबसे बड़े सीताफल उत्पादक हैं।इसे बिहार, उड़ीसा, तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में भी उगाए जाते हैं जो वर्षा आधारित हैं। इसमें बेहतरीन पोषण लाभों के अलावा महत्वपूर्ण चिकित्सीय लाभ भी हैं। चिकित्सीय फॉर्मूलेशन में कच्चे फलों, बीजों, पत्तियों और जड़ों का उपयोग अच्छा माना जाता है।

सीताफल की खेतीरू जलवायु, किस्में, और आधुनिक तकनीकें

सीताफल की खेती में सही जलवायु और मिट्टी, उन्नत किस्मों का चयन, प्रभावी बुवाई तकनीक और सही समय पर कटाई महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन सभी चरणों को अपनाकर उच्च गुणवत्ता और बेहतर उत्पादन सुनिश्चित किया जा सकता है।

सीताफल की खेती के लिए जलवायु और मिट्टी की आवश्यकता

सीताफल (कस्टर्ड एप्पल) के लिए हल्की सर्दियों के साथ गर्म और आर्द्र उष्णकटिबंधीय जलवायु की आवश्यकता होती है। इष्टतम तापमान की आवश्यकता 20 से 35°C है। इसकी खेती समुद्र तल से 1000 मीटर ऊपर तक भी सफलतापूर्वक की जा सकती है।

अच्छी जल निकास वाली मिट्टी फसल के लिए आदर्श होती है। यह फसल उथली गहराई और लवणीय प्रकृति वाली मिट्टी के लिए उपयुक्त है। इसकी खेती के लिए उथली गहराई और लवणीय मिट्टी अच्छी है। फसलों को अच्छी जल निकास वाली मिट्टी चाहिए। गहरी काली मिट्टी, जो अच्छी जल निकासी वाली है, उनके विकास में मदद कर सकती है।

सीताफल की उन्नत किस्में

सीताफल की उन्नत किस्में जो की अधिक उपज देती है निम्नलिखित दी गई है:

- बालानगर
- अरका सहन
- **एनोना रेटिकुलाटा** – बैल का दिल, रामफल
- **ए मुरीकाटा** – सोरसोप, लक्ष्मण फल
- **एक चेरिमोला** – चेरिमोया, चेरिमोला आदि।

सीताफल की बुवाई कैसे की जाती है?

गड्ढों को 2–3 सप्ताह तक खुला रखना चाहिए। बाद में 15–20 किलोग्राम खाद को खोदी गई या ऊपरी मिट्टी में मिला देना चाहिए और फिर वापस गड्ढे में भर देना चाहिए। अच्छी तरह से स्थापित कलमों को गड्ढे के मध्य में लगाया जाना चाहिए। 5 x 5 मीटर की दूरी अपनाई जा सकती है।

शरीफा (कस्टर्ड एप्पल) में हाथ परागण

शरीफा (कस्टर्ड सेब) का फूल उभयलिंगी है (एक फूल में नर और मादा भाग होते हैं) और प्रोटोगिनस डाइकोगैमी (कलंक या मादा भाग पराग. कोशों द्वारा पराग छोड़ने से पहले ग्रहणशील होते हैं), जो स्व–परागण को सीमित करता है। वर्तमान में हाथ परागण अधिकतर कम उपज देने वाली किस्मों, फसल अवधि में हेरफेर और बेहतर गुणवत्ता वाले फल के लिए किया जाता है।

सीताफल की कटाई

सीताफल, जो एक मौसमी फल है कटाई के समय इसके फल का रंग हरे से अलग रंग में बदलना शुरू हो जाता है। अपरिपक्व फल नहीं पकते। परिपक्वता का संकेत भी कुछ शीर्षस्थ कलियों का खत्म होना है, जिसमें भीतरी गूदा दिखता है। कटाई अगस्त से अक्टूबर तक चलती है। एक पेड़ में 300 से 400 ग्राम वजन के 100 से अधिक फल लगते हैं।

कैक्टस की खेती कैसे करें: सूखा प्रभावित क्षेत्रों के लिए एक आदर्श समाधान

आज के समय में जलवायु परिवर्तन टिकाऊ फसल उत्पादन के लिए सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक बन गया है। लंबे समय तक सूखा और मरुस्थलीकरण भारतीय गर्म शुष्क क्षेत्र के सामने आने वाली समस्याओं में से एक हैं। जहां ग्रामीण गरीब और छोटे किसान सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। उच्च तापमान और ख्राब मिट्टी के कारण उनकी फसलों को ऐसी कठोर आपदाओं (जैसे सूखा) का सामना करने की आवश्यकता होती है। इन सभी समस्याओं के चलते कैक्टस (Cactus) की फसलें दुनिया भर में बढ़ती रुचि प्राप्त कर रही हैं। विशेष रूप से कैक्टस नाशपाती या कांटेदार नाशपाती (ओपंटिया फिकस–इंडिका (एल)) की डिमांड अधिक हो रही है। इसकी अनूठी विशेषताएँ जो कठोर पारिस्थितिक परिस्थितियों में लचीलापन प्रदान करती हैं।

कैक्टस की खेती के लिए जलवायु और मिट्टी

कैक्टस की खेती के लिए आदर्श परिस्थि. तियाँ धूप वाली गर्म ग्रीष्मकाल और ठंडी शुष्क सर्दियाँ होती हैं। साथ ही जहां वसंत और शुरुआती गर्मियों और पुरे साल के दौरान तापमान –5 डिग्री सेल्सियस से नीचे नहीं जाता है। इसकी खेती उन इला. कों में आसानी से की जा सकती है जहां 300–600 मि.मी. के बीच वर्षा होती हो। आम तौर पर, यह पाले के प्रति संवेदनशील होता है लेकिन कुछ क्लोन प्रकृति में शीत प्रतिरोधी भी पाए जाते हैं। यह क्षारीय स्थिति में जीवित रह सकता है और अच्छा प्रदर्शन कर सकता है। यह प्राकृतिक आवास में विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगता है। यह एक सूखा प्रतिरोधी फसल है और रेतीली मिट्टी वाले रेगिस्तानी और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में अच्छी तरह से उगाई जाती है।

अधिक वर्षा कैक्टस की खेती के लिए अनुपयुक्त है। भारी, पथरीली और पथरीली मिट्टी में भी इसकी खेती आसनी से की जा सकती है इसके अलावा अम्लीय मिट्टी भी विकल्प हो सकती है। रेगिस्तानी मिट्टी केवल उन्हीं कैक्टि को सहारा देती है जो शुष्क–जलवायु परिस्थितियों के लिए बहुत उपयुक्त होते है।

कैक्टस की खेती में बुवाई के तरीके

कैक्टस को जुलाई–सितंबर और फरवरी–अप्रैल के दौरान खेत में लगाया जा सकता है। लेकिन हरे रंग मेंघर में इसे साल भर लगाया जा सकता है। कैक्टस को 5–6 महीने की उम्र के परिपक्व क्लैडोड के माध्यम से वानस्पतिक रूप से प्रचारित किया जाता है। क्लैडोड का उपचार मदर प्लांट से हटाने के बाद किया जाना चाहिए।

क्लैडोड को लगभग दो सप्ताह तक छाया में रखें ताकि उचित उपचार और निर्जलीकरण हो सके। काले पॉलिथीन बैग या छोटे प्लास्टिक के बर्तन नर्सरी तैयार करने के लिए किया जाता है। कैक्टस जल जमाव की स्थिति के प्रति बहुत संवेदनशील है। अतः उपयुक्त माध्यम का चयन करना है। चयनित वनस्पति प्रकार के शारीरिक रूप से परिपक्व क्लैडोड क्लोन रोपण के लिए उपयोग किया जाना चाहिए। ताजा काटे गए क्लैडोड को हटाने के बाद उसका उपचार किया जाना चाहिए। मदर प्लांट से अलग किए गए क्लैडोड को कम से कम दो सप्ताह तक छाया में रखें। फील्ड स्थिति के अंतर्गत रोपण से पहले क्लैडोड को कवकनाशी से उपचारित किया जा सकता है। उन्हें सड़ने से बचाने के लिए बोर्डो मिश्रण या मैंकोजेब/2 ग्राम/लीटर पानी का इस्तेमाल किया जा सकता है।

कैक्टस में सिंचाई

कैक्टस के पौधों में रोपण के तुरंत बाद सिंचाई नहीं की जाती है। हल्के पानी से सिंचाई रोपण के 2–3 दिन बाद करनी चाहिए तथा उसके बाद 10–15 दिनों का अंतराल पर एक वर्ष तक सिंचाई करनी चाहिए। पूरी तरह से स्थापित वृक्षारोपण को बेहतर उपज के लिए हल्की सिंचाई की आवश्यकता होती है। जिन क्षेत्रों में ग्रीष्म ऋतु में वर्षा अच्छी होती है वहाँ सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है।

कैक्टस की कटाई

कटाई मुख्य रूप से उस उद्देश्य पर निर्भर करती है जिसके लिए कैक्टस की खेती की जाती है। फसल काटने वाले कैक्टस उत्पाद की आवश्यकता के अनुसार चुनने की अवधि और संख्या अलग–अलग होती है।

55 HP श्रेणी में किफायत और शक्ति का प्रतीक – जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर

जॉन डियर 5310 एक शक्तिशाली 55 HP ट्रैक्टर है जो कई उद्देश्यों को पूरा कर सकता है। एचपीसीआर (हाई प्रेशर कॉमन रेल) इलेक्ट्रोनिक इंजेक्टर से लैस टर्बोचार्ज्ड पावरटेक इंजन ईंधन का कुशलतापूर्वक उपयोग करने और वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने में मदद करता है। इसलिए, उच्च शक्ति प्रदान करना और बड़े उपकरणों और भारी शुल्क वाले अनुप्रयोगों के साथ काम करना आसान है। हमारे इस लेख में आपको जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर का पूरा विवरण मिलेगा।

जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर की इंजन पावर क्या है?

- इंजन के लिए हाई बैक अप टॉर्क डिजाइन किया गया है, 55 HP (416 kW) का इंजन 2100 आरपीएम पर काम कर सकता है।
- जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर के इंजन में 3 सिलेंडर हैं।
- ये ट्रैक्टर खेती का जादूगर है, जो आपको खेती करना आसान बना देगा। 55 हॉर्स पावर श्रेणी के इंजन के साथ, यह आधुनिक तकनीक से भरा हुआ ट्रैक्टर किसानों के लिए एकदम सही साथी है।
- बड़े किसानों को लागत प्रभावी, अत्यधिक ईंधन कुशल इंजन से संचालन मिलता है।
- इसके अलावा, ड्राई क्लीनर एयर फिल्टर के साथ इंजन धूल से मुक्त रहता है, जिससे इसका संचालन आसान और प्रभावी होता है।

जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

- जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर में 9 फॉरवर्ड‸ 3 रिवर्स गियर (GearPro स्पीड) दिए गए हैं।
- ट्रैक्टर में ट्रांसमिशन को आंशिक रूप से टॉप–शाफ्ट सिंक्रोनाइज्ड (TSS) के रूप में वर्णित किया जाता है।
- जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर में पावर स्टीयरिंग आता है और पावर स्टीयरिंग सामान्य तेल का उपयोग करता है।
- जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर में 68 liter की बड़ी ईंधन टैंक क्षमता है, जिससे यह बिना किसी परेशानी के लंबे समय तक काम कर सकते है।
- ट्रैक्टर का कुल वजन 2110 किलोग्राम, व्हील बेस 2050 mm, ट्रैक्टर की चौड़ाई (width) 1850 mm, लंबाई (समदहजी) 3535 mm, ग्राउंड क्लीयरेंस (ground clearance) 435 mm है।
- ट्रैक्टर के अगले टायर 6-5 x 20, और पिछले टायरों का size 16-9 x 28 है।
- ट्रैक्टर की लिफ्टिंग कैपेसिटी (lifting capacity) 2000 किलोग्राम है।

जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर की कीमत?

जॉन डियर 5310 ट्रैक्टर की कीमत 9.25–10.50 रूपए है। कीमत में कई स्थानों पर थोड़ा फरक भी देखने को मिल जाता हैं। इस ट्रैक्टर की कीमत किसानों के बजट के आधार पर निर्धारित की गयी हैं।

न्यू हॉलैंड 7500 टर्बो सुपर ट्रैक्टर: पावरफुल फीचर्स जो आपकी खेती को बना दें आसान

न्यू हॉलैंड कंपनी समय–समय पर किसानों की आवश्यकताओं के अनुसार ट्रैक्टरों का निर्माण करती है। इसी सोच के साथ कंपनी ने न्यू हॉलैंड 7500 टर्बो सुपर ट्रैक्टर का निर्माण किया है। यह एक अत्याधुनिक और शक्तिशाली ट्रैक्टर है जो 75 एचपी की इंजन शक्ति के साथ आता है। इस ट्रैक्टर का उपयोग करके खेती के सभी कार्य आसानी से किए जा सकते हैं। इस लेख में, हम इसके फीचर्स, स्पेसिफिकेशन और कीमत के बारे में विस्तार से जानेंगे।

न्यू हॉलैंड 7500 टर्बो सुपर की इंजन क्षमता

- न्यू हॉलैंड 7500 टर्बो सुपर का इंजन 75 एचपी की शक्ति के साथ आता है और इसमें 4 सिलेंडर होते हैं।
- यह 4–व्हील ड्राइव ट्रैक्टर है जो कृषि कार्यों में बेहतरीन प्रदर्शन प्रदान करता है।
- लंबे समय तक खेत में कार्य करते समय भी इसका इंजन गर्म नहीं होता, क्योंकि इसका वाटर–कूल्ड सिस्टम इंजन को ठंडा रखने में मदद करता है।
- इसमें ड्राई एयर फिल्टर भी होता है, जो धूल और गंदगी को रोककर इंजन को सुरक्षित रखता है।

न्यू हॉलैंड 7500 टर्बो सुपर फीचर्स और स्पेसिफिकेशन

- **गियरबॉक्स:** इसमें 12 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर होते हैं, जिससे ट्रैक्टर का संचालन सुचारू रहता है।
- **पावर स्टीयरिंग:** पावर स्टीयरिंग की सुविधा के कारण इसे कम जगह में भी आसानी से मोड़ा जा सकता है।
- **ब्रेक्स:** मल्टी डिस्क तेल में डूबे ब्रेक्स होने से इसे नियंत्रित करना आसान होता है।
- **डबल–क्लच:** स्वतंत्र क्लच लीवर के साथ आता है जो इसे डबल–क्लच सुविधा प्रदान करता है।
- **पीटीओ पावर:** इसमें 65 एचपी की पीटीओ शक्ति है, जिससे पीटीओ चालित उपकरणों का संचालन आसान होता है।
- **वजन उठाने की क्षमता:** यह 1700–2000 किलोग्राम तक का वजन उठा सकता है।
- **बैटरी और अल्टरनेटर:** इसमें 12 वोल्ट की 100 ।ी बैटरी और 55A उच का अल्टरनेटर है।
- **अन्य सुविधाएँ:** साइड–शिफ्ट गियर लीवर, उच्च प्लेटफार्म, व्यापक फुटस्टेप, और न्यूनतम टायर फिसलन जैसी सुविधाएँ इसे और भी प्रभावी बनाती हैं।

न्यू हॉलैंड 7500 टर्बो सुपर की कीमत

इस ट्रैक्टर की कीमत लगभग 12.10 से 13.80 लाख रुपये है, जो स्थान के अनुसार अलग–अलग हो सकती है। इसकी कीमत इसकी शक्ति और अन्य विशेषताओं के अनुसार तय की गई है, जिससे यह बड़े कृषि उपकरणों को आसानी से चला सकता है।

महिंद्रा युवो टेक प्लस 475: खेती के लिए सबसे बेहतर ट्रैक्टर की पूरी जानकारी

ये ट्रैक्टर खास कर किसान भाइयों की खेती को आसान बनाने के लिए बनाए गए हैं, जिससे समय की बचत होगी और जोरदार या शक्तिशाली काम करने में समय की बचत होगी। कंपनी ने इस ट्रैक्टर में कई नए फीचर्स जोड़ दिए हैं, जो इसे अन्य ट्रैक्टरों से अलग बनाते हैं। किसान भाइयों, भारी उपकरणों को खींचने या भार ढ़ोने के लिए महिंद्रा युवो टेक प्लस 475 ट्रैक्टर एक अच्छा ट्रैक्टर है।

महिंद्रा युवो टेक प्लस 475 ट्रैक्टर के बारे में विवरण

महिंद्रा युवो टेक प्लस 475 ट्रैक्टर की शानदार विशेषताओं ने इसे किसानों के लिए एक अच्छा विकल्प बनाया है, जो अपनी खेती को बेहतर बनाना चाहते हैं और अपने कृषि व्यवसाय में बड़ी जीत हासिल करना चाहते हैं। ये खेती का जादूगर ट्रैक्टर है, जो खेती करना आसान बना देगा। 44 HP श्रेणी के इंजन और आधुनिक तकनीक से भरपूर यह शक्तिशाली ट्रैक्टर किसानों के लिए एकदम सही साथी है।

इंजन और ईंधन क्षमता

- महिंद्रा युवो टेक प्लस 475 ट्रैक्टर में 4 सिलेंडरों वाला शक्तिशाली इंजन है, जो 2000 RPM उत्पन्न करता है।
- यह इंजन अत्यधिक ईंधन कुशल है, जिससे बड़े किसानों को लागत प्रभावी संचालन का लाभ मिलता है।
- इसमें ड्राई क्लीनर एयर फिल्टर लगा है, जो इंजन को धूल रहित रखता है और इसके संचालन को सुचारू और कुशल बनाता है।
- ट्रैक्टर में नेचुरली एस्पिरेटेड वाटर–कूल्ड सिस्टम है, जो इंजन को ठंडा बनाए रखता है।
- इस ट्रैक्टर में 55 लीटर की बड़ी ईंधन टैंक क्षमता है, जो लंबे समय तक बिना रुकावट के काम करने की सुविधा देती है।

महिंद्रा युवो टेक प्लस 475 ट्रैक्टर के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

ट्रांसमिशन

- महिंद्रा युवो टेक प्लस 475 में कॉन्स्टेंट मेष ट्रांसमिशन है।
- इसका साइड शिफ्ट गियरबॉक्स गियर बदलने को आसान बनाता है।
- महिंद्रा युवो टेक प्लस 475 में 12 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर विकल्प हैं, जो कम समय में ज्यादा क्षेत्र कवर करने में मदद करते हैं।
- यह उन्नत ट्रांसमिशन सिस्टम ट्रैक्टर के संचालन को आसान और प्रभावी बनाता है।

पीटीओ पावर

- महिंद्रा युवो टेक प्लस 475 ट्रैक्टर में 51HP की PTO पावर है, जो 540 RPM पर चलती है।
- इसमें रिवर्स PTO की सुविधा भी है।
- इसका PTO सिस्टम सभी उपकरणों को सुचारू रूप से संचालित करता है और खेती के अनुभव को सरल और कुशल बनाता है।

स्टीयरिंग और ब्रेक

- इसमें पावर स्टीयरिंग दी गई है, जो ट्रैक्टर के संचालन को आसान बनाती है।
- पावर स्टीयरिंग के कारण यह खेतों और सड़कों पर आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है।
- महिंद्रा युवो टेक प्लस 475 ट्रैक्टर में तेल में डूबे हुए ब्रेक हैं, जो कठिन परिस्थितियों जैसे ढलानों और फिसलन भरी सतहों पर बेहतर नियंत्रण प्रदान करते हैं।

टायर्स

- महिंद्रा युवो टेक प्लस 475 ट्रैक्टर में मजबूत और बड़े टायर दिए गए हैं।
- फ्रंट टायर का साइज 6.0 – 16 और रियर टायर का साइज 13.6 – 28 है।
- ये टायर किसी भी सतह पर स्थिरता और बेहतर कर्षण प्रदान करते हैं।
- इनका ट्रेड डिजाइन मिट्टी के संघनन को कम करता है और कर्षण को बढ़ाता है।

हाइड्रोलिक्स और लिफ्टिंग क्षमता

- महिंद्रा युवो टेक प्लस 475 ट्रैक्टर की लिफ्टिंग क्षमता 1700 किलोग्राम है।
- उन्नत हाइड्रोलिक्स और सटीक सेंसिंग पॉइंट्स के कारण यह भारी उपकरणों को आसानी से संचालित कर सकता है।

महिंद्रा युवो टेक प्लस 475 ट्रैक्टर कीमत क्या है?

महिंद्रा युवो टेक प्लस 475 ट्रैक्टर 44 HP श्रेणी का है। ट्रैक्टर का मूल्य 6.95 लाख से 7.20 लाख रूपए है। ये ट्रैक्टर बड़े किसानों और ढुलाई के कार्यों के लिए अच्छा हैं। यह कल्टीवेटर, रोटावेटर, बुवाई, थ्रेशर, आलू प्लांटर, ढुलाई, पुडलिंग, मल्चर, स्ट्रॉ रीपर, सुपर सीडर, आदि के लिए बनाया गया है।

फार्मट्रैक 6055 पावरमैक्स eCRT: कीमत और फीचर्स जानकर चौंक जाएंगे

फार्मट्रैक कंपनी ट्रैक्टर निर्माण के क्षेत्र में अग्रणी है। इसके ट्रैक्टर किसानों के बीच अत्यधिक लोकप्रिय हैं। यह कंपनी किफायती ट्रैक्टर बनाती है, जो छोटे किसानों के बजट के अनुरूप होते हैं। फार्मट्रैक ट्रैक्टर फ्यूल–एफिशिएंट होते हैं और कम डीजल की खपत में बेहतरीन प्रदर्शन करते हैं। किसानों की जरूरत और पसंद को ध्यान में रखते हुए, कंपनी समय–समय पर नई तकनीकों से युक्त ट्रैक्टर पेश करती रहती है।

इसी क्रम में, कंपनी ने फार्मट्रैक 6055 पावरमैक्स मब्ज ट्रैक्टर लॉन्च किया है, जो नई तकनीक से लैस है। यह ट्रैक्टर नवीनतम मब्ज तकनीक का उपयोग करके बनाया गया है, जो इसे और भी अधिक कुशल बनाता है। इस लेख में आप इस ट्रैक्टर की विशेषताओं के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करेंगे।

फार्मट्रैक 6055 पावरमैक्स मब्ज इंजन पावर क्या हैं?

- फार्मट्रैक 6055 पावरमैक्स eCRT ट्रैक्टर में कंपनी ने 60 HP का शक्तिशाली इंजन दिया है, जो 4 सिलेंडरों के साथ आता है।
- इस ट्रैक्टर का इंजन 3910 cc की क्यूबिक क्षमता वाला है और यह छवद ज्नतइव इंजन है।
- इसे नई तकनीक के साथ बनाया गया है, जो ईंधन बचाने और पर्यावरण के अनुकूल ECRT तकनीक का उपयोग करता है।
- इस ट्रैक्टर का इंजन 2000 RPM पर बेहतरीन प्रदर्शन करता है, जिससे खेती के सभी काम आसानी से किए जा सकते हैं।
- इंजन में धूल जाने से रोकने के लिए कंपनी ने ड्राई टाइप एयर फिल्टर लगाया है।

फार्मट्रैक 6055 पावरमैक्स eCRT ट्रैक्टर के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

- फार्मट्रैक 6055 पावरमैक्स eCRT में फुल्ली कांस्टेंट मेश का ट्रांसमिशन कंपनी ने प्रदान किया है साथ ही इस ट्रैक्टर में आपको ड्यूल बसनजबी मिल जाता है, जिससे की ट्रैक्टर में गियर्स बदलने में आसानी होती है और आप चलते ट्रैक्टर में भी गियर्स आसानी से बदल सकते है।
- फार्मट्रैक 6055 पावरमैक्स eCRT ट्रैक्टर में आपको आगे और पीछे की गति के 20 गियर्स मिलते है यानि की 16 फॉरवर्ड, 4 रिवर्स गति के लिए साथ ही इस ट्रैक्टर की आगे की तरफ जाने की गति 36 kmph है, जिससे की आपको अच्छी गति प्राप्त होता है ।
- इस फार्मट्रैक 6055 पावरमैक्स eCRT ट्रैक्टर में कंपनी ने तेल में डूबे ब्रेक प्रदान किये है, जिससे की अच्छा वाहन नियंत्रण प्राप्त होता है।
- ट्रैक्टर में आपको पावर स्टीयरिंग मिलता है, जिससे की आप ट्रैक्टर को आसानी से घुमा सकते है।
- फार्मट्रैक 6055 पावरमैक्स eCRT ट्रैक्टर में आपको 51.6 HP पावर की पीटीओ पावर प्राप्त होता है। इस ट्रैक्टर का पीटीओ 540 के रेटेड आरपीएम पर अच्छा प्रदर्शन करता है।
- ट्रैक्टर में फ्रंट टायर साइज (19-05 cm X 40-64 cm) 7-5 Inch x 16 इंच है और रियर टायर साइज (42-92 cm X 71-12 cm) 16-9 Inch x 28 इंच है।
- फार्मट्रैक 6055 पावरमैक्स eCRT ट्रैक्टर 2500 किलोग्राम तक वजन उठा सकता है जिससे की आप इसका प्रयोग ढुलाई के कार्यों के लिए भी कर सकते है।
- ट्रैक्टर में कंपनी ने 60 लीटर का फ्यूल टैंक दिया है जिससे की आप लंबे समय तक बिना रुके कार्य कर सकते है।

फार्मट्रैक 6055 पावरमैक्स eCRT ट्रैक्टर की कीमत क्या हैं?

फार्मट्रैक 6055 पावरमैक्स eCRT ट्रैक्टर की कीमत 10.30 से 10.60 लाख रुपये है। कई जगहों पर कीमतों में थोड़ा अंतर भी देखने को मिलता है। ये ट्रैक्टर 5000 घंटे या 5 साल की वार्रन्टी (जो भी पहले आए) के साथ आता है। किसान भाइयों, इस लेख में आपने फार्मट्रैक 6055 पावरमैक्स eCRT ट्रैक्टर की सभी जानकारियाँ प्राप्त कीं, इसी तरह के ट्रैक्टर या खेती से संबंधित उपकरणों के बारे में अधिक जानकारी के लिए आप हमारी वेबसाइट merikheti पर जा सकते हैं।

अक्टूबर महीने ट्रैक्टर की बिक्री काफी बढ़िया रही, और

अक्टूबर के सेल्स के आंकड़े FADA द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं।

Tractor OEM	OCT'24	Market Share (%) OCT'24	OCT'23	Market Share (%) OCT'23	Growth (%)
MAHINDRA & MAHINDRA LIMITED (TRACTOR)	14,792	22.96%	14,178	22.68%	4.33%
MAHINDRA & MAHINDRA LIMITED (SWARAJ DIVISION)	11,227	17.42%	11,065	17.70%	1.46%
TAFE LIMITED	8,767	13.61%	8,684	13.89%	0.96%
INTERNATIONAL TRACTORS LIMITED	7,983	12.39%	7,713	12.34%	3.50%
ESCORTS KUBOTA LIMITED (AGRI MACHINERY GROUP)	6,043	9.38%	6,267	10.03%	-3.57%
JOHN DEERE INDIA PVT LTD (TRACTOR DEVISION)	5,884	9.13%	4,558	7.29%	29.09%
EICHER TRACTORS	3,691	5.73%	4,268	6.83%	-13.52%
CNH INDUSTRIAL (INDIA) PVT LTD	2,596	4.03%	2,481	3.97%	4.64%
KUBOTA AGRICULTURAL MACHINERY INDIA PVT.LTD.	1,161	1.80%	1,092	1.75%	6.32%
Others	2,289	3.55%	2,201	3.52%	4.00%
Total	**64,433**	**100%**	**62,507**	**100%**	

Source: FADA Research

IPL™ Biologicals

55 एचपी श्रेणी में आने वाले 3 बेहतरीन ट्रैक्टर जो आपकी खेती को बनाएंगे आसान

किसान भाइयों, आप जानते हैं कि ट्रैक्टर एक कृषि मशीन है जो खेती को आसान बनाता है। यह मुख्य रूप से फसल काटना, बीज बोना, भूमि की जुताई और अन्य कृषि कार्यों के लिए प्रयोग किया जाता है। ट्रैक्टर खेती की उत्पादकता और दक्षता को बढ़ाता है, विभिन्न प्रकार के कृषि उपकरणों को खींचने और चलाने में सक्षम होता है। इस लेख में हम आपको 3 ऐसे ट्रैक्टरों के बारे में जानकारी देंगे जिनसे आपका खेती का काम आसानी से होगा।

दमदार इंजन के साथ आने वाले 3 ट्रैक्टर मॉडल्स

निचे आपको 3 ट्रैक्टरों के बारे में जानकारी दी गयी हैं, जिसमें सोलिस 6024 S, पॉवरट्रैक यूरो 55 नेक्स्ट, कुबोटा MU 5501 आदि ट्रैक्टर शामिल किये गए हैं:

1. सोलिस 6024 S

- सोलिस कंपनी का यह ट्रैक्टर दमदार इंजन और बेहतरीन फीचर्स के साथ आता है।
- सोलिस 6024 S ट्रैक्टर में 60 एचपी का शक्तिशाली इंजन और 51 एचपी की पावर टेक–ऑफ (PTO) शक्ति है।
- इसमें 4087 cc का इंजन दिया गया है, जो 2100 आरपीएम पर काम करता है और बेहतर माइलेज प्रदान करता है।
- यह ट्रैक्टर 12 फॉरवर्ड और 12 रिवर्स गियर के साथ सिंक्रोमेश गियरबॉक्स और प्लैनेटरी ट्रांसमिशन सिस्टम से लैस है।
- नियंत्रण के लिए इसमें मल्टी–डिस्क ऑयल–इम्मर्स्ड ब्रेक दिए गए हैं।
- इस ट्रैक्टर की वजन उठाने की क्षमता 2500 किलोग्राम है।
- इसकी कीमत 8.70 लाख से 10.42 लाख रुपये के बीच है।

2. पॉवरट्रैक यूरो 55 नेक्स्ट

- पावरट्रैक का यह ट्रैक्टर शक्तिशाली इंजन और आधुनिक फीचर्स के साथ आता है, जिससे यह किसानों के बीच काफी लोकप्रिय है। इस ट्रैक्टर में 55 एचपी का इंजन और 4 सिलेंडर दिए गए हैं।
- इसकी PTO पावर 46.7 एचपी है।
- गियरबॉक्स में 12 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर मिलते हैं।
- बेहतर नियंत्रण के लिए इसमें मल्टी प्लेट ऑयल इम्मर्स्ड डिस्क ब्रेक दिए गए हैं।
- पॉवरट्रैक यूरो 55 नेक्स्ट ट्रैक्टर आसानी से सभी प्रकार के कृषि कार्यों को संभाल सकता है और इसकी वजन उठाने की क्षमता 2000 किलोग्राम है।
- इसकी कीमत 8.90 लाख से 9.25 लाख रुपये के बीच है।

3. कुबोटा MU 5501

- कुबोटा MU 5501 में 2434 cc का 4 सिलेंडर वाला इंजन दिया गया है, जो 55 एचपी की पावर उत्पन्न करता है।
- इसमें डबल क्लच के साथ सिंक्रोमेश ट्रांसमिशन सिस्टम है, जो खेती के कामों को आसान और सुचारू बनाता है।
- इसका संचालन सरल और उपयोग में सहज है।
- कुबोटा MU 5501 ट्रैक्टर में 65 लीटर क्षमता वाला ईंधन टैंक और 1800 से 2100 किलोग्राम की हाइड्रोलिक वजन उठाने की क्षमता है।
- इसकी कीमत 9.29 लाख से 9.47 लाख रुपये के बीच है।

भारत में ड्यूज–फार के शीर्ष 5 ट्रैक्टर मॉडल: ताकत और विश्वसनीयता के लिए प्रसिद्ध

ड्यूज–फार भारत में एक प्रसिद्ध जर्मन ट्रैक्टर निर्माता है। ड्यूज–फार कंपनी 1864 में जर्मनी के क्लेनबर्ग में स्थापित हुई थी। 1927 में कंपनी ने ड्यूज–फार डज्भ 222 नामक अपना पहला ट्रैक्टर बनाया। ड्यूज–फार ट्रैक्टर उच्च गुणवत्ता और विश्वसनीयता के लिए जाना जाता है। यहाँ ड्यूज–फार कंपनी के शीर्ष 5 ट्रैक्टरों की जानकारी दी गई है, जो उच्च गुणवत्ता और विश्वसनीयता के लिए जाने जाते हैं।

ड्यूज–फार कंपनी के शीर्ष 5 ट्रैक्टर

ड्यूज–फार कंपनी द्वारा निर्मित ये ट्रैक्टर मॉडल्स उन्नत तकनीक, बेहतरीन शक्ति और विश्वसनीयता के लिए जाने जाते हैं। ये ट्रैक्टर विभिन्न कृषि कार्यों को सुगम और प्रभावी ढंग से पूरा करने में सहायक हैं। आइए जानते हैं इन शीर्ष ट्रैक्टर मॉडलों की विशेषताएं और उनके लाभ।

1. ड्यूज–फार एग्रोलक्स 80 प्रोफिलिन

- ड्यूज–फार एग्रोलक्स 80 प्रोफिलिन ट्रैक्टर में 80 HP का शक्तिशाली इंजन है, जिसमें 4 सिलेंडर और 4000 सीसी इंजन क्षमता है, जो 2200 RPM पर बेहतरीन प्रदर्शन करता है।
- इसमें 68-8 HP की PTO पावर मिलती है और 15 फॉरवर्ड. 15 रिवर्स या 10 फॉरवर्ड. 10 रिवर्स गियर का विकल्प मिलता है।
- सामने के टायर 7-50 x 16/11-2 x 24 और पीछे के टायर 16-9 x 30 साइज में हैं।
- इसकी कीमत लगभग 16.38–16.50 लाख रुपये है।

2. ड्यूज–फार एग्रोलक्स 50 4WD

- 50 HP के इंजन के साथ ड्यूज–फार एग्रोलक्स 50 4WD ट्रैक्टर में 43 HP की PTO पावर है।
- इसमें 12 फॉरवर्ड. 3 रिवर्स गियरबॉक्स और मैकेनिकल स्टीयरिंग है।
- इसकी भार उठाने की क्षमता 1900 किलोग्राम है।
- टायर साइज 11-2 x 20 फ्रंट और 14-9 x 28 रियर है।
- इसकी कीमत 10.76–10.91 लाख रुपये है।

3. ड्यूज–फार 3042 E

- यह 42 HP का ट्रैक्टर है, जिसमें 3 सिलेंडर और 2500 सीसी क्षमता का इंजन है।
- ड्यूज–फार 3042 E में 8 फॉरवर्ड. 2 रिवर्स गियरबॉक्स है और यह 1250 किलोग्राम तक वजन उठा सकता है।
- टायर साइज 6-00 x 16 फ्रंट और 13-6 x 28 रियर है।
- इसकी कीमत लगभग 6.97–7.12 लाख रुपये है।

4. ड्यूज–फार एग्रोलक्स 55 4WD

- 55 HP इंजन के साथ ड्यूज–फार एग्रोलक्स 55 4WD ट्रैक्टर आकर्षक डिजाइन में आता है।
- इसमें 8 फॉरवर्ड. 2 रिवर्स या 12 फॉरवर्ड. 3 रिवर्स गियरबॉक्स है और हाइड्रोलिक ऑपरेटेड ऑयल इमर्स्ड सील्ड डिस्क ब्रेक्स हैं।
- यह 2000 किलोग्राम वजन उठाने में सक्षम है।
- इसकी कीमत 11.19–11.34 लाख रुपये है।

5. ड्यूज–फार एग्रोमैक्स 60

- ड्यूज–फार एग्रोमैक्स 60 ट्रैक्टर में 60 HP इंजन है जो फुली कॉन्सटेंट मेश ट्रांसमिशन के साथ आता है।
- इसमें 8 फॉरवर्ड़ 2 रिवर्स गियरबॉक्स है और हाइड्रोस्टैटिक ऑयल इमर्स्ड ब्रेक्स हैं।
- इसकी भार उठाने की क्षमता 2100 किलोग्राम है।
- टायर साइज 12-4 x 20/7-5 x 16 फ्रंट और 16-9 x 28 रियर है।
- इसकी कीमत 8.00–9.10 लाख रुपये है।

ऊपर बताए गए ड्यूज–फार ट्रैक्टर मॉडल्स, उनके फीचर्स और कीमत की जानकारी आपको निर्णय लेने में मदद कर सकती है।

Coromandel
FUTURE POSITIVE
Ab sab Fit hai!
GROMOR FITSOL™
Complete nutrition with
just 2 Fertigation grades
GROMOR FITSOL™ SOLANACEAE
GROMOR FITSOL™ SOLANACEAE
Coromandel

गेंदा के फूल की खेती के लिए इस राज्य में मिल रहा अच्छा-खासा अनुदान

किसानों की आमदनी को दोगुना करने के उद्देश्य से भारत की राज्य एवं केंद्र दोनों सरकारें अपने अपने स्तर से प्रयास कर रही हैं। राज्य सरकारें किसानों की आय बढ़ाने के लिए बागवानी के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं। इसके लिए बहुत सारी योजनाएं जारी की गई हैं। इन योजनाओं के अंतर्गत कृषकों को फूल-फल की खेती को प्रोत्साहन देने के लिए अनुदान भी दिया जा रहा है। गोवा सरकार द्वारा भी किसानों को गेंदा की खेती करने पर आर्थिक प्रोत्साहन दिया जा रहा है। जी हाँ, गोवा के बारदेज, सत्तारी, संगुएम, कैनाकोना और क्यूपेम के किसान गेंदा की खेती कर रहे हैं। क्योंकि इससे तुरंत पैसा मिलता है। गोवा सरकार ने फूलों की खेती योजना के लिए चालू वित्त वर्ष के लिए 90 लाख रुपये आवंटित किए हैं।

फूलों की खेती का क्षेत्रफल और सब्सिडी

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि गोवा सरकार राज्य के किसानों को गेंदा फूल (Marigold Farming) की खेती पर प्रति हेक्टेयर 75,000 रुपये का अनुदान प्रदान कर रही है। गोवा सरकार की गेंदा फूल (Marigold) उत्पादकों को प्रदान की जाने वाली सब्सिडी, उत्पादकों के लिए वरदान साबित हो रही है। बतादें, कि इससे पड़ोसी राज्य कर्नाटक और महा. राष्ट्र पर निर्भरता काफी कम हो गई है। केंद्र और राज्य सरकारों की योजनाओं ने किसानों को गेंदा फूल की खेती (Marigold Cultivation) के अंतर्गत रकबा बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया है।

गेंदा फूल का रकबा और उपज कितनी है?

दशहरा, दिवाली और पड़वा जैसे त्योहारों के दौरान इस तटवर्ती राज्य में गेंदा फूल की काफी अच्छी मांग होती है। इसके लिए पिछले कुछ वर्षों में अन्य राज्यों पर निर्भरता काफी हद तक कम हो गई है। इस साल 400 से अधिक किसानों ने 30 हेक्टेयर रकबे में 180 टन गेंदा फूल का उत्पादन किया है।

गेंदा की खेती पर रुपये के आधार पर सब्सिड़ी

आपको एक आंकड़ों के आधार पर जानकारी दें तो वर्ष 2022 में 15 हेक्टेयर में गेंदा की खेती हुई। लेकिन, वर्ष 2023 में यह बढ़कर 25 हेक्टेयर हो गई और इस साल यह 30 हेक्टेयर है। अधिकारी ने कहा कि किसानों को प्रति हेक्टेयर 75,000 रुपये का अनुदान मिलता है, जिसमें राष्ट्रीय बागवानी मिशन के अंतर्गत 16,000 रुपये और फूलों की खेती को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार की योजना के अंतर्गत 59,000 रुपये शामिल हैं।

रबी फसलों की उत्पादकता कैसे बढ़ाएं: भूमि तैयारी और उर्वरक प्रबंधन के टिप्स

ईश्वर और प्रकृति के एहसान से इस वर्ष काफी अच्छा पानी बरसा, इससे रबी फसलों की बुवाई के लिये, भूमि की तैयारी के लिये अच्छा अवसर मिल गया। जहां तक अच्छे उत्पादन का प्रश्न है, यदि भूमि की तैयारी अच्छी तरह से हो जाये तो बुआई अंकुरण और स्वस्थ पौधों के मिलने का अनुमान लगाया जा सकता है। हमारे देश का लगभग 60 प्रतिशत भाग ऐसा है जहां पर रबी की बुआई वर्षा आधारित होती है। साथ ही, इसी हिस्सों को यदि नमी मिल गई हो तो वहां की औसत उपज बढ़ाना आसान हो जाता है। जहां तक गेहूं का प्रश्न है अधिकांश क्षेत्र सिंचित होता है और सिंचाई के लिये जल के विभिन्न स्त्रोत होते हैं।

रबी की फसल – चना भी काफी लाभकारी

सर्वाधिक सिंचाई कमांड क्षेत्र में उपलब्ध रहती है, रबी की दूसरी फसल चना है, जिसकी बुवाई के लिए भूमि चयन, भूमि की तैयारी से लेकर रखरखाव तक में आमतौर पर उतनी चिंता नहीं की जाती है, जितनी गेहूं की चिंता की जाती है। चना के साथ–साथ अन्य दलहनी फसलें जैसे मसूर, मटर आदि फसलें भी ऐसी हैं, जिनका यदि उचित रखरखाव किया जाये तो उत्पादकता को बढ़ाया जाना कोई असंभव बात नहीं है। दलहनी फसलें प्रोटीन की प्रमुख स्रोत होती है, जिसकी आवश्यकता आज आम आदमी को बहुत है।

रबी दलहनी फसलों में उर्वरक का उपयोग कम होता है

सामान्य तौर पर रबी दलहनी फसलों में उर्वरक काफी कम इस्तेमाल होता है। जहां होता है वहां भी असंतुलित होता है, जबकि इन फसलों में फास्फोरस तथा पोटाश का उपयोग नत्रजन की तुलना में कम होता है। चूंकि, दलहनी फसलें वायुमंडल से नत्रजन एकत्रित करने की क्षमता रखती हैं। इस वजह से अन्य आवश्यक उर्वरकों की पूर्ति करके बेहतर उपज हांसिल की जा सकती है।

राईजोबियम कल्चर तथा पीएसबी का उपयोग करना बेहद जरूरी

इसके अतिरिक्त राईजोबियम कल्चर तथा पीएसबी का उपयोग अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए, ताकि अच्छा अंकुरण अधिक नाईट्रोजन तथा भूमि में उपलब्ध फास्फेट का अधिक से अधिक उपयोग किया जा सके। ऐसा करके दलहनी विशेषकर चने की उत्प. ादकता सरलता से बढ़ाई जा सकती है। उल्लेखनीय है, कि देश की जनसंख्या 2030 तक **अनुमानत:** 145 करोड़ तक पहुंच सकती है। इसके लिये 335 टन दालों की आवश्यकता पड़ सकती है, जो वर्तमान के उत्पादन से लगभग दोगुना है।

मांग को पूरा करने लिए दलहन का आयात संभव

मांग की पूर्ति के लिये विवश शासन को बाहर से दलहन का आयात करना होगा, जिसका भार आम लोगों की आर्थिक संतुलन को भी बिगाड़ सकता है। पिछले दिनों बढ़े दलहन के दाम की मार आज तक लोगों को याद है। इस कारण हमें हर संभव प्रयास करके दलहनों की उत्पादकता बढ़ाने के लिये कम लागत की तकनीकी का अंगी. करण शत–प्रतिशत करना ही होगा।

भारत में भेड़ों की 5 शीर्ष नस्लें – जानिए इनकी विशेषताएँ

भारत में भेड़ की कई नस्लों का पालन किया जाता हैं। देश में लगभग 20 से ज्यादा भेड़ो की नस्लें पाई जाती हैं। भेड़ का इस्तेमाल कपडे कालीन और मटन बनने के लिए किया जाता हैं इसलिए देश की अर्थव्यवस्था में भी भेड़ का बहुत योगदान हैं। इन सभी बातों को देखते हुए आज के दिन भेड़ पालन बहुत मुनाफे का कारोबार बन गया हैं। अगर आप भी भेड़ पालन करने के बारे में सोच रहे हैं तो आप सही जगह आए हैं, इस लेख में हम आपको भेड़ की सभी उत्तम नस्लों के बारे में जानकारी देंगे।

भारत में भेड़ की शीर्ष 5 नस्लों के नाम और उनकी विशेषताएँ

1. गद्दी नस्ल

- इस नस्ल की भेड़ें आकार में छोटी होती हैं, और जम्मू की किश्तवाड़ और भदरवाह तहसीलों में पाई जाती हैं।
- गद्दी नस्ल की भेड़ हिमाचल प्रदेश की सर्दियों में कुल्लू घाटियों में बड़ी संख्या में निवास करते हैं, और गर्मियों में वे पीर पंजाल पर्वत की सबसे ऊंची चोटियों पर चरते हैं, ज्यादातर पद्दार रेंज में।
- इस नस्ल के नर भेड़ सींग वाले होते हैं, मादा भेड़ें सींग रहित होती हैं।
- गद्दी नस्ल के ऊन का रंग आमतौर पर सफेद होता है और चेहरे पर भूरे रंग के बाल होते हैं, इस से प्राप्त होने वाली ऊन बढ़िया और चमकदार होती है।
- इस भेड़ की ऊन की औसत वार्षिक उपज 1.13 किलोग्राम प्रति भेड़ है, जिसे वर्ष में तीन बार काटा जाता है।
- भेड़ से प्राप्त ऊन का उपयोग उच्च गुणवत्ता वाले कुल्लू शॉल और कंबल के निर्माण के लिए किया जाता है।

2. मारवाड़ी भेड़

- मारवाड़ी नस्ल की भेड़ राजस्थ के अजमरे, बाड़मेर, जालोर, जोधपुर, नागौर और पाली में पाई जाती हैं। इस नस्ल का पालन ऊन और मांस के लिए किया जाता हैं।
- मारवाड़ी भेड़ की नस्ल गर्मी के मौसम में आसानी से रह सकती हैं, इसलिए इनका पालन राजस्थान के रेगिस्तान में आसानी से किया जा सकता हैं।
- भेड़ की इस नस्ल का चेहरा आमतोर पर काला होता हैं और गर्दन के निचले हिस्से तक फैले होते हैं, इस नस्ल की ऊन सफेद रंग की होती हैं।
- इनके कान टयुबलर और आकार में बहुत छोटे होते हैं वही इनकी नाक सीधी, चपटी और पतली होती हैं।

3. मेचेरी नस्ल

- इस नस्ल की भेड़े सेलम, इरोड, करूर, नमक्कल और तमिलनाडु के धर्मपुरी जिलों के कुछ हिस्सों में पाई जाती है।
- मेचेरी नस्ल नस्ल की भेड़ को मांस उत्पादन के लिए पाला जाता है।

- इसका शरीर मध्यम आकार का और त्वचा का रंग हल्का बैंगनी होता है।
- इस नस्ल में नर मादा दोनों में कोई सींग नहीं होते और पूँछ छोटी और पतली होती है।
- वयस्क नर का औसत शरीर का वजन 36 कि.ग्रा. होता हैं और वयस्क मादा के शरीर का औसत वजन 22 कि.ग्रा. होता है।

4. डेक्कनी नस्ल

- भेड़ की डेक्कनी नस्ल राजस्थान की ऊनी प्रजातियों और आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु की बालों वाली प्रजातियों का मिश्रण है।
- यह बॉम्बे–डेक्कन क्षेत्र और कर्नाटक और आंध्र प्रदेश राज्यों के कुछ हिस्सों में पाई जाती है।
- इस नस्ल की भेड़ छोटी और कठोर होती है, और ख्राब चरागाह परिस्थितियों के लिए अच्छी तरह से अनुकूलित होती है।
- इसमें रंगीन ऊन होता है, काले और भूरे रंग अधिक प्रभावी होते हैं।
- ऊन की औसत वार्षिक उपज 4.54 किलोग्र. ाम प्रति भेड़ है।
- ऊन निम्न श्रेणी का होता है और बाल और महीन रेशों का मिश्रण होता है, जिसका उपयोग ज्यादातर मोटे कंबल के निर्माण के लिए किया जाता है।
- इस नस्ल के झुंडों को मुख्यत मटन के लिए पाला जाता है।

5. चोकला भेड़

- इस भेड़ का पालन उत्तरी भारत के कई राज्यों में किया जाता हैं, इसका पालन ऊन और मास के लिए किया जाता हैं।
- इस भेड़ के ऊन का रंग सफेद होता हैं और चेहरे का रंग भूरा और गर्दन तक फैला हुआ हो सकता हैं।
- इस नस्ल के भेड़ हलके से माध्यम आकार के जानवर होते हैं और चेहरे पर बाल नहीं होते हैं।
- इस नस्ल के कान का आकार छोटे से माध्यम होता हैं।

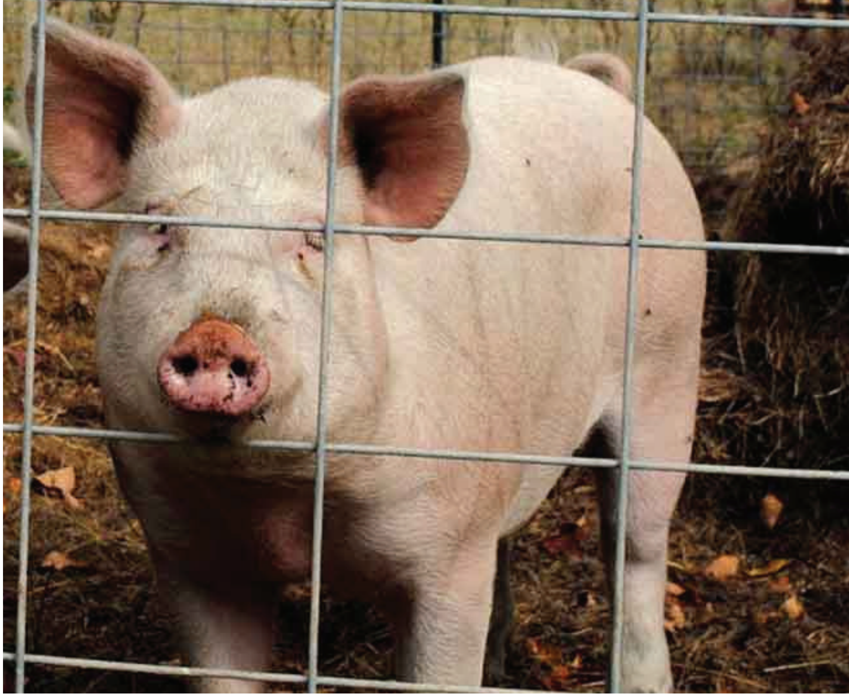

रत में सूअरों की प्रमुख नस्लें और उनकी विशेषताएं | पशुपालन गाइड

भारत में कई प्रकार के पशुओं का पालन किया जाता हैं। सूअर भी इन में से एक हैं, जी हां भारत में सूअरों का पालन बड़े पैमाने पर किया जाता हैं। भारत में सूअरों की विविध आबादी पाई जाती हैं। अभी तक देश में चौदह स्वदेशी सुअर नस्लों की पहचान की गई है और उन्हें आधिकारिक तौर पर मान्यता दी गई है। भारतीय सूअरों की आबादी में 29.40% वर्णनात्मक सूअर हैं, जिनमें 2.80% विदेशी, 18.10% क्रॉसब्रेड और 8.20% स्वदेशी सूअर शामिल हैं, जबकि 70.60% गैर–वर्णित सूअर हैं। आइए इस लेख के माध्यम से भारत में पाई जाने वाली प्रमुख सुअरों की नस्ल के बारे में जानते हैं।

भारत में पाई जाने वाली सूअर की प्रमुख नस्लें

भारत में चौदह स्वदेशी सुअर की नस्लें पाई जाती हैं। इनमें से कुछ अच्छा उत्पादन देने वाली नस्लें हैं जो निम्नलिखित हैं:

1. हूंगरू सूअर

इस नस्ल को भारत की पहली मान्यता प्राप्त सुअर नस्ल है, यह स्वदेशी नस्ल पश्चिम बंगाल के पूर्वी उप–हिमालयी क्षेत्र, विशेष रूप से उत्तरी बंगाल से उत्पन्न हुई है। ये सूअर मुख्य रूप दिखने में काले रंग के होते हैं, कभी–कभी सफेद खुर और रूपक प्रदर्शित करते हैं। उनकी विशेषता एक चौड़ा, चपटा चेहरा और एक छोटा, ऊपर की ओर मुड़ा हुआ थूथन है।

उनके बड़े, लटकते हुए, दिल के आकार के कान हाथी के कान के समान होते हैं, जिससे उन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है। घुंघरू सूअरों का चेहरा विशिष्ट बुलडॉग जैसा होता है। हूंगरू सूअर एक बार में 8 से 18 सूअरों को जन्म देते हैं, कुछ चयनित सूअरों ने जन्म के समय 17 सूअर के बच्चे तक पैदा किए हैं। सूअर के सात जोड़े थन होते हैं। वयस्क घुंघरू सूअरों का वजन 80 से 100 किलोग्राम के बीच होता है। आठ महीनों में, नर सूअर के लिए शरीर का औसत वजन 65 किलोग्राम और मादा का वजन 58 किलोग्राम होता है। दोनों लिंग विनम्र और संभालने में आसान होते हैं, मादाएं उत्कृष्ट उर्वरता और मातृत्व क्षमता का प्रदर्शन करती हैं, जो पिगलेट के जीवित रहने के लिए महत्वपूर्ण है।

2. एगोंडा सूअर

सूअर की एगोंडा नस्ल गोवा के तिस्वाडी, बर्देज और पेरनेम जिले के क्षेत्रों के साथ–साथ दक्षिण गोवा जिले के मोर्मुगाओ, कैनाकोना और क्वेपेम तालुका में पाई जाती है। एगोंडा सूअर दिखने में छोटे होते हैं, इनके छोटे कान, छोटी थूथन, मटमैले पेट और खुरदरे बाल होते हैं। जबकि प्रमुख रंग काला है, कुछ जानवरों के पैरों और चेहरे पर सफेद धब्बे देखने को मिल सकते हैं। सूअर की एगोंडा नस्ल बहुत उग्र और सतर्क रहने के लिए जानी जाती हैं। 12 महीनों में वयस्क शरीर का औसत वजन 48 किलोग्राम तक हो सकता है, नवजात सूअरों का वजन लगभग 500 – 600 ग्राम तक होता है, और दूध छुड़ाने के बाद उनका वजन लगभग 3.53 – 4 किलोग्राम होता है।

3. नियांग मेघा सुअर

सुअर की नियांग मेघा नस्ल ज्यादातर मेघालय राज्य के खासी, गारो और जयंतीया पर्वत में पाई जाती हैं। इस सुअर का रंग आमतौर पर काला होता है लेकिन माथे और कूल्हे के जोड़ पर तारे के आकार का सफेद रंग मौजूद हो सकता है। थूथन मध्यम पतला होता है, नाक आंशिक रूप से सफेद होता है। यह छोटे आकार की स्वदेशी नस्ल हैं जिसके शरीर का वजन दस महीने की उम्र तक 35–40 किलोग्राम, और नवजात सूअरों का वजन लगभग 500 – 550 ग्राम तक होता है, और दूध छुड़ाने के बाद उनका वजन लगभग 5.25 – 6.25 किलोग्राम तक होता है।

4. घुर्राह नस्ल

घुर्राह नस्ल के सूअर उत्तर प्रदेश के बरेली मंडल और लखनऊ मंडल के आसपास के हिस्सों में पाए जाते हैं। इन्हें देशी या बरेली लोकल के नाम से भी जाना जाता है, वे ष्घुरष नामक एक अजीब ध्वनि उत्पन्न करते हैं, यही वजह है कि उनका नाम घुर्रा रखा गया है। ये सूअर मुख्य रूप से काले होते हैं, हालांकि कुछ भूरे–काले या भूरे रंग के भी होते हैं। वे चपटे पेट, कोणीय शरीर और लंबे सीधे थूथन वाले मध्यम आकार के होते हैं। वयस्क नर घुर्रा सूअरों का वजन लगभग 46 किलोग्राम होता है, जबकि मादाओं का वजन लगभग 48 किलोग्राम होता है।

अमृतमहल गाय: भारत की ऐतिहासिक नस्ल, जानें खासियत और उपयोगिता

भारत कृषि प्रधान देश है, जिसमें कृषि के अलावा पशुपालन भी होता है। देश में बहुत सारे दुधारू पशु पालन किए जाते हैं। दुधारू पशुओं में गाय सबसे अहम है। भारत में कई गायों की नस्ले मिलती हैं। इसमें विलायती और देशी गाय दोनों शामिल हैं। यद्यपि विलायती गायें अधिक दूध देती हैं, उनका दूध पानी की तरह पतला होता है। भारत में देशी गायों का दूध अधिक फैट वाला होता है और इसे अमृत के समान माना जाता है। कई नस्लें खेती करने के उद्देश्य से भी पाली जाती है, जिसमें अमृतमहल गाय सबसे मशहूर मानी जाती है।

अमृतमहल गाय के बारे में विवरण

अमृत महल मवेशी नस्ल कर्नाटक के मैसूर जिले में पाई जाने वाली नस्ल है। अमृत महल गाय दिखने में बहुत सुंदर होती है। 1800 के मध्य में, मैसूर राज्य के तत्कालीन शासकों ने अमृत महल नस्ल बनाई। यह नस्ल स्थानीय लोगों के अनुकूल थी। बंदूक बैल, पैक बैल और अन्य नामों से बैलों को युद्ध उपकरणों के परिवहन के लिए वर्गीकृत किया गया था। अमृत महल का मतलब है दूध। ये गायें दुर्भाग्य से कम दूध देती हैं, इसलिए इन्हें भारवाहक नस्ल कहा जाता है।

अमृत महल नस्ल की विशेषताएँ

अमृत महल गाय नस्ल की विशेषताएँ निम्नलिखित दी गयी है:

- अमृत महल नस्ल के रंग विभिन्न प्रकार के भूरे रंगों में होता है। इन रंगों में सफेद से लेकर काले तक के शेड्स शामिल होते हैं, जिनमें चेहरे और गलकंबल पर सफेद–भूरे निशान पाए जाते हैं।

- मुँह, पैर और पूंछ का सिरा आमतौर पर काले होते हैं, लेकिन उम्रदराज पशुओं में हल्के रंग के हो सकते हैं।
- सिर लंबा और नाक की ओर पतला होता है, माथा हल्का उभरा हुआ होता है और बीच में संकरा व झुर्रीदार होता है।
- सींग सिर के ऊपर से निकलते हैं, सींग आपस में करीब होते हैं और ऊपर व पीछे की ओर बढ़ते हैं। इनका सिरा नुकीला और काला होता है।
- आँखें हल्की लालिमा लिए होती हैं, कान छोटे होते हैं, क्षैतिज स्थिति में होते हैं, अंदर से पीले और सिरे पर पतले होते हैं।
- गलकंबल पतला होता है और बहुत दूर तक नहीं फैला होता, शील और नाभि का भाग छोटा और शरीर से सटा हुआ होता है।
- बैलों में कूबड़ अच्छी तरह विकसित और सुंदर होता है, जिसकी ऊँचाई लगभग 8 इंच होती है, गर्दन मजबूत और लंबी होती है, पीठ समतल होती है, कमर चौड़ी और पिछला हिस्सा समतल होता है।
- शरीर मजबूत और मांसल होता है, जिसमें कंधे और पिछले हिस्से अच्छी तरह से बने होते हैं।
- इस नस्ल की औसत ऊँचाई 50 से 52 इंच होती है।औसत दुग्ध उत्पादन लगभग 1000–1200 किलोग्राम होता है। औसत ब्यांत का अंतराल लगभग 600 दिन होता है।

जोश का राज़ मेरा
SWARAJ
ट्रैक्टर बोले तो
SWARAJ
POWERFUL ENGINE
STRONG FRONT AXLE
LED FENDER AND TAIL LAMP
SWARAJ 744 FE
NAYA SWARAJ, MERA SWARAJ

करी पत्ता की खेतीरू मसाला और औषधीय गुणों से भरपूर फसल से कमाएं अच्छा मुनाफा

करी पत्ते भारत की हर रसोई में इस्तेमाल किया जाने वाला मसाला हैं। इसकी मसाला और औषधीय दोनों फसलों के रूप में खेती की जाती है। इसके पत्ते का इस्तेमाल कई चीजों में किया जाता हैं। इसमें औषधीय गुण होने के कारण बाजार में इसकी मांग बहुत बढ़ रही हैं इसका पाउडर बनाकर भी बेचा जाता हैं। इसका इतना अधिक दाम होने से किसान इसकी खेती करके अच्छा मुनाफा कमा सकता हैं।

करी पत्ता के औषधीय गुण

करी पत्ता का इस्तेमाल मसाला ही नहीं बल्कि इसके औषधीय गुणों के लिए भी जाना जाता है। इसके कुछ मुख्य औषधीय गुण निम्नलिखित हैं:

- करी पत्ता पाचन तंत्र को सुधारता है, इसमें कई प्रकार के एंटीऑक्सीडेंट होते हैं जो की पाचन प्रक्रिया को बेहतर बनाते हैं।
- ब्लड शुगर स्तर को नियंत्रित करने में करी पत्ते अच्छे हैं। इन्हें हाइपोग्लाइसेमिक गुण मिलते हैं, जो इंसुलिन के प्रति उनकी प्रतिक्रिया को बढ़ाते हैं।
- इसमें विटामिन ए और सी भी पाया जाता है जो सेहत के लिए काफी लाभकारी माना गया है।
- करी पत्ते के एंटीऑक्सीडेंट झुर्रियों को कम करने और त्वचा को निखारने में मदद करते हैं। यह त्वचा पर संक्रमण को भी रोकता है।

करी पत्ते की खेती के लिए जलवायु और मिट्टी

अच्छी जल निकासी वाली लाल बलुई दोमट मिट्टी बेहतर पत्ती उपज के लिए आदर्श होती है। इष्टतम तापमान की आवश्यकता 26° से 37°C है।

करी पत्ते की बुवाई के लिए भूमि की तैयारी और बुवाई

अच्छी जुताई पाने के लिए खेत की 3–4 बार जुताई की जाती है। आखिरी जुताई से पहले अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद 20 टन/हेक्टेयर की दर से डाली जाती है। रोपण से एक से दो महीने पहले 1.2 से 1.5 मीटर की दूरी पर 30 x30 x30 से.मी. आकार के गड्ढे खोदे जाते हैं। जुलाई से अगस्त तक करी पत्ते के फल उपलब्ध होते हैं। फलों की कटाई के तीन से चार दिन बाद, बीजों को गूदा निकालकर पॉली बैग या नर्सरी बेड में बो देना चाहिए। रोपण के लिए एक वर्ष पुराने पौधे उपयुक्त हैं। गड्ढे में एक पौधा लगाया जाता है।

करी पत्ते की फसल में सिंचाई

रोपण के तुरंत बाद गड्ढों की सिंचाई कर दी जाती है। तीसरे दिन दूसरी सिंचाई दी जाती है और फिर सप्ताह में एक बार सिंचाई की जाती है।

लौंग की खेती कैसे करें: जलवायु, मिट्टी, रोपण और तुड़ाई की सम्पूर्ण जानकारी

लौंग का इस्तेमाल मसाले के रूप में किया जाता हैं। लौंग एक सुगंधित मसाला होने के कारण रसोई में खाना पकाने, आयुर्वेदिक औषधि और खुशबूदार पदार्थ तैयार करने के लिए इस्तेमाल किया जाता हैं। लौंग को अंग्रेजी में Clove के नाम से जाना जाता हैं और इसका वैज्ञानिक नाम Syzygium aromaticum हैं। भारत में इसकी खेती कई स्थानों पर की जाती हैं। इसकी खेती से किसान अच्छा मुनाफा भी कमाते हैं। आज के इस लेख में हम आपको इसके उत्पादन से संबंधी सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

लौंग की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु और मिट्टी का चुनाव

लौंग की खेती के लिए सामान्य जलवायु की आवश्यकता होती हैं, ये न तो अधिक गर्मी को सहन कर सकता हैं और ना ही अधिक ठण्ड को इसलिए इसकी खेती के लिए उत्तम तापमान 20°C से 30°C तक माना जाता हैं। इसकी खेती के लिए 150 – 250 से.मी. की वार्षिक वर्षा और 1000 मीटर समंद्र तल तक की ऊंचाई के साथ आर्द्र उष्णकटिबंधीय जलवायु उपयुक्त है। किसान साथियों उच्च ह्यूमस सामग्री वाली गहरी समृद्ध दोमट और लेटराइट मिट्टी लौंग की खेती के लिए सबसे उपयुक्त होती है। मिट्टी में उचित जल निकासी की व्यवस्था होनी बहुत आवश्यक होती हैं।

लौंग की रोपण के लिए पौध की तैयारी और बुवाई का तरीका

- लौंग की खेती में बुवाई के लिए अच्छे पके हुए फलों से बीज निकालकर तुरंत बोये जाते हैं।
- बीजों को नर्सरी में बोया जाता हैं जिससे की पौधे तैयार होते हैं।
- बीज पांच से छह सप्ताह में अंकुरित हो जाते हैं।
- नर्सरी में जैविक खाद के मिश्रण में बीजों को लगाया जाना चाहिए और भूमि में 10 सेंटीमीटर की दूरी रखते हुए पंक्ति अनुसार बीज की रोपाई करनी चाहिए।
- दो साल पुराने पौधों को 30 से.मी. x 30 से.मी. x 30 से.मी. आकार के गड्ढों में मिट्टी और साथ ही 10 कि.ग्रा./गड्ढे में गोबर की खाद भर कर 6 मीटर की दूरी पर रोपा जाता है।
- रोपण से पहले 50 ग्राम/गड्ढा एजोस्पिरिलम डालें जिससे की पौधों को सुरक्षा मिलती हैं और अधिक उत्पादन भी प्राप्त होता हैं।

लौंग की खेती में रोपाई के बाद के कार्य

- पौधों की रोपाई के बाद पौध के लिए छाया प्रदान करें।
- पौधे के आस पास को सूखे पत्तों से मल्चिंग करें।
- जब भी आवश्यक हो पौधों के बीच में निराई–गुड़ाई करें।
- प्रारंभिक स्थापना के दौरान छाया प्रदान करने के लिए केले को उगाया जा सकता है।
- प्रारंभिक स्थापना के दौरान आंशिक छाया के लिए छोटे अस्थायी पंडाल बनाए जा सकते हैं।

लौंग की खेती में खाद और उर्वरक प्रबंधन

एक वर्ष पुराने पौधों को जून–जुलाई और सितंबर–अक्टूबर के दौरान दो भागों में गोबर की खाद 15 कि.ग्रा., नाइट्रोजन 20 ग्राम, फॉस्फोरस 20 ग्राम, पोटाश 60 ग्राम डाला जा सकता है। हर साल खुराक को तदनुसार बढ़ाया जाता है और 7 साल पुराने फल वाले पेड़ पर गोबर की खाद 50 किलोग्राम, नाइट्रोजन 300 ग्राम, फॉस्फोरस 300 ग्राम और पोटाश 960 ग्राम का उपयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त एजोस्पाइरिलम एवं फॉस्फोबैक्टीरियम की 50–50 ग्राम मात्रा खाद के एक माह बाद डालनी चाहिए।

लौंग के पौधों में सिंचाई प्रबंधन

वर्षा के अभाव में प्रारंभिक अवस्था में बार–बार पानी देना आवश्यक है। गर्मी के महीनों में सिंचाई करनी चाहिए। लौंग के पोधो में जनवरी–मई माह के दौरान में 8 लीटर पानी ड्रिप से या बेसिन से लगाना लाभकारी होता है।

लौंग की खेती में कटाई और तुड़ाई का कार्य

लौंग की खेती में पौधों की रोपाई के छठे वर्ष से फल लगना शुरू हो जाता है। फूलों की कलियों की कटाई तब की जानी चाहिए जब वे पूरी तरह परिपक्व हो जाएं, लेकिन खिलने से पहले। कलियों को गुच्छों के रूप में काटा जाता है और अलग करके पांच से सात दिनों तक धूप में सुखाया जाता है। प्रत्येक पेड़ से 2 – 3 किलो सूखी कलियाँ उपज के रूप में प्राप्त होती हैं।

मेरीखेती ने नवंबर माह की किसान पंचायत का भव्य आयोजन किया

मेरीखेती द्वारा नवंबर महीने की किसान पंचायत का आयोजन धर्मपाल सिंह की यूपी के दादरी जनपद के अंतर्गत खंडेरा गॉव में किया गया। इस किसान पंचायत में नवीनतम कृषि तकनीकियों द्वारा अधिक आय के विषय पर चर्चा हुई। किसान पंचायत के दौरान वरिष्ठ पूसा कृषि वैज्ञानिक डॉ सीवी सिंह, किसान धर्मपाल सिंह मनिंदर सिंह, चमन सिंह, जवाहर शर्मा, आवेद, संजय खान, अमन सिंह, भगत सिंह, वीरेंद्र सिंह, बिहारी लाल, इंद्रजीत, संजय कुमार, ऋषिपाल आदि किसान मौजूद रहे।

आधुनिक कृषि तकनीकों पर हुई चर्चा

किसान पंचायत के दौरान डॉ सीवी सिंह ने किसानों को शर्दियों में फसल की देखभाल से लेकर बेहतर उत्पादन हांसिल करने के लिए कुछ नवीनतम तकनीकों की जानकारी प्रदान की। डॉ सीवी सिंह का कहना है, कि यदि किसान आधुनिक कृषि तकनीकों का इस्तेमाल करके खेती करते हैं तो उनको अच्छी उपज हांसिल हो सकती है। परिणामस्वरूप, किसानों की आमदनी में भी काफी इजाफा होगा।

वर्टिकल फार्मिंग की जानकारी

डॉ सीवी सिंह ने वर्टिकल फार्मिंग के विषय में किसानों में बताया कि यह एक आधुनिक कृषि तकनीक है, जिसमें खड़ी परतों में फसलें उगाई जाती हैं। यह विधि साल भर फसल उत्पादन की अनुमति देती है और इसका उपयोग शहरी क्षेत्रों में किया जा सकता है जहाँ जगह सीमित है।

वर्टिकल फार्मिंग पारंपरिक खेती के तरीकों की तुलना में पानी के उपयोग को भी कम करती है। क्योंकि पानी पूरे सिस्टम में रिसाइकिल किया जाता है। वर्टिकल फार्मिंग का एक लाभ यह भी है, कि यह किसानों को उस वातावरण को नियंत्रित करने की अनुमति देता है, जिसमें पौधे उगाए जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप अधिक उपज और बेहतर स्वाद वाली फसलें मिलती हैं। यह विधि कीटनाशकों और शाकनाशियों की जरू. रतों को भी समाप्त करती हैं। क्योंकि, पौधे नियंत्रित वातावरण में उगाए जाते हैं। वर्टिकल फार्मिंग ऊर्जा–कुशल भी है, क्योंकि इसमें सूरज की रोशनी के बजाय एलईडी लाइट का उपयोग किया जा सकता है।

हाइड्रोपोनिक्स

डॉ सीवी सिंह ने किसानों को हाइड्रोपोनिक्स विधि के विषय में भी जानकारी प्रदान की। उन्होंने हाइड्रोपोनिक्स तकनीक में पौधों को मिट्टी के बजाय पोषक तत्वों से भरपूर पानी के घोल में उगाया जाता है। कृषि की इस पद्धति से वर्ष भर फसल उत्पादन संभव है। साथ ही, इसका उपयोग सीमित जगह वाले शहरी क्षेत्रों में भी किया जा सकता है। हाइड्रोपो. निक्स पारंपरिक खेती के तरीकों की तुलना में पानी के उपयोग को भी कम करता है। क्योंकि पानी को पूरे सिस्टम में रिसाइकिल किया जाता है। हाइड्रोपोनिक्स का एक लाभ यह है कि यह किसानों को पौधों के पोषक तत्वों के स्तर को नियंत्रित करने की अनुमति देता है, जिसके परिणामस्वरूप अधिक उपज और बेहतर स्वाद वाली फसलें मिलती हैं। यह विधि कीटनाशकों और शाकनाशियों की आवश्यकता को भी समाप्त करती है। क्योंकि पौधे नियंत्रित वातावरण में उगाए जाते हैं।

SONALIKA
LEADING AGRI EVOLUTION

आधुनिक टेक्नोलॉजी
बेमिसाल ताक़त

SONALIKA TIGER DI 65 4WD

सबसे बड़ा
CRDS इंजन
4712 cc

इंजन

65 HP पॉवर
55 HP ईंधन माइलेज

ट्रेम स्टेज-IV

MERIKHETI

किसानो की बात मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501
Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010